NOW NOIDA अपडेट

वॉल्यूम 1 | अंक 1 | January 2024

Title-Code: UPHIN51287

नरेंद्र मोदी की गारंटी

UP में विकसित भारत संकल्प यात्रा का असर

न्यू नोएडा और न्यू ग्रेटर नोएडा का मास्टर प्लान क्या कहता है?

साक्षात्कार-धीरेंद्र सिंह, विधायक, जेवर

नरेन्द्र मोदी
भारत के प्रधानमन्त्री

योगी आदित्यनाथ
उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री

'जेवर'

सपनों में जान, आसमानी उड़ान

नववर्ष
की हार्दिक
शुभकामनाएं
2024
NOW
NOIDA
अपडेट

NOW NOIDA अपडेट

सत्य से साक्षात्कार

पत्रिका सदस्यता प्रपत्र

भारत के व्यक्तियों के लिए वार्षिक सदस्यता: ₹1,440 ☐

भारत के बाहर और कॉर्पोरेट दरें: ₹2,000 ☐

Name .....

Address.....

.....

.....

.....

Postcode.....

Telephone.....

Email.....

कृपया चेक या पोस्टल ऑर्डर करें

MBI Digital Private Limited को देय।

D 8 A007
airtel

NOW NOIDA अपडेट

सत्य से साक्षात्कार

संपादक मंडल

संपादक :	संदीप कुमार ओझा
उप संपादक :	पूजा मिश्रा
सहयोगी संपादक :	निर्मल गौड़
नोएडा ब्यूरो चीफ :	यूनुस आलम
वरिष्ठ संवाददाता :	ओम प्रकाश सिंह
संवाददाता :	साजिद अली
कला और सयंजोन :	अनिरुद्ध शी, गुलशन कुमार
प्रबंध निदेशक :	संदीप कुमार ओझा

निदेशक एवं प्रकाशक :	MBI DIGITAL PVT LTD
पंजीकृत कार्यालय :	प्लॉट नंबर 99 इकोटेक 3 उद्योग केंद्र 2 ग्रेटर नोएडा 201306
मुद्रक एवं प्रकाशक :	MBI DIGITAL PVT LTD प्लॉट नंबर-99, इकोटेक थर्ड, उद्योग केंद्र-2 ग्रेटर नोएडा-201306 दूरभाष- +91 120-4553364 infonownoida@gmail.com

एमबीआई डिजिटल प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सन्दीप कुमार ओझा द्वारा प्लाट नंबर-99, इकोटेक-थर्ड, उद्योग केंद्र-दो, ग्रेटर नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) से प्रकाशित व चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिग वर्क प्रा. लि. नोएडा, सी-40, सेक्टर-8 नोएडा से मुद्रित। संपादक सन्दीप कुमार ओझा (TITLE-CODE: UPHIN51287)

कंटेंट्स

वॉल्यूम 1 | अंक- प्रथम   January 2024   मूल्य: ₹100

कवर स्टोरी

'जेवर'

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनेगा देश का गहना

पृष्ठ - 08

UP के सबसे ग्रैंड इवेंट की तैयारी	03
मोदी की गारंटी है	04
एक अधूरे शहर की कहानी	06

विशेष साक्षात्कार
यमुना प्राधिकरण के सभी गांव बनेंगे 'स्मार्ट विलेज' — 12

विशेष साक्षात्कार
जेवर विधायक से खास मुलाकात - *धीरेंद्र सिंह* — 14

विशेष साक्षात्कार
किसान न हों परेशान, होंगे सभी समाधान - *तेजपाल नागर* — 16

विशेष साक्षात्कार
नशा माफिया पर नकेल डालना पहला टास्क - *मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी, गौतमबुद्ध नगर* — 18

विशेष साक्षात्कार
"अपराधियों के हौसले पस्त हुए हैं" - *आनंद कुलकर्णी, ज्वाइंट सीपी, लॉ एंड ऑर्डर* — 20

विशेष राज्य' की राजनीति क्यों ? — 22

समान नागरिक संहिता की जरूरत — 24

भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 उत्तर प्रदेश मे इसकी थार्थतता	26
UP में विकसित भारत संकल्प यात्रा का असर	28
"भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराध, उनकी रोकथाम और नियंत्रण नीतियां"	30
परवरिश	33
अग्नाशय कैंसर के लक्षण और उपाय	36
न्यू नोएडा और न्यू ग्रेटर नोएडा का मास्टर प्लान क्या कहता है?	38
महामृत्युंजय मंत्र : *कथा, उत्पत्ति और जाप के नियम*	40

स्किनकेयर की क्रांति: आधुनिक सौंदर्य में आयुर्वेद का प्रभाव	42
आगरा से गोवर्धन का हवा में करिए सफर	45
रिंकू सिंह... T 20 का रॉकस्टार	46
पैरा बैडमिंटन में देश का बढ़ाया मान	48

संपादकीय

गौतम बुद्ध नगर में नित्य नूतन निर्माण के आधार रखे जाते हैं। यहां नित्य नवीन प्रयोग हो रहे हैं। यहां नित्य आविष्कार हो रहे हैं। यहां नित्य कीर्तिमान गढ़े जा रहे हैं। मगर उनकी मौजूदगी मुख्यधारा की मीडिया में कहीं नहीं। नोएडा में कितना कुछ घट रहा है ? कोई बताता क्यों नहीं ? कोई दिखाता क्यों नहीं ? किसी के पास नोएडा के लिए वक्त क्यों नहीं ? वक्त जिनके पास है भी वो कितनी अच्छी सूचनाएं या जानकारियां जनमानस तक पहुँचा पा रहे हैं। आज के तकनीकी युग में सूचनाओं के ज्यादातर माध्यमों से नोएडा के बारे में जो प्रकाश में आता है। वो अधकचरी जानकारियां हैं। सोशल मीडिया के सेंसेशन हैं। शरारती तत्वों के खुराफाती दिमाग से उपजी खबरों को लोग सच मान रहे हैं। ऐसे में नोएडा, ग्रेटर नोएडा की खबरों को, सूचनाओं को, और जानकारियों को जन जन तक पहुंचाने की अहम जिम्मेदारी निभाएगा NOW NOIDA अपडेट।

NOW NOIDA अपडेट। नोएडा और ग्रेटर नोएडा के निवासियों की जरूरत का नाम है। हम जन सरोकार से जुड़े हर मुद्दे की जड़ तक जाएंगे। आपके सपनों से, संघर्ष से, जीवन से. आपके वर्तमान और भविष्य से जुड़ी जानकारियां गगनचुम्बी अट्टालिकाओं से भी तलाश कर लाएंगे। हमारे संवाददाताओं का संगठन हर गली, गांव और कस्बे में खुद पहुंचकर आपके लिए जानकारी जुटाएंगे। नोएडा के उद्योग हों, धंधे हों, कारोबारी हों, दुकानदार हों, रेहड़ी पटरी पर जीवन गुजर बसर कर रही आबादी हो. सोसायटी में रहने वाले संभ्रांत हों या फिर दूर गांव में बैठा ग्रेटर नोएडा का किसान NOW NOIDA सबकी आवाज है। हमारे माध्यम से आप खबरों को पढ़ पाएंगे। देख पाएंगे। और सुन भी पाएंगे। NOW NOIDA पत्रिका में हर माह नोएडा और ग्रेटर नोएडा के सभी बड़े मुद्दों का स्थान तय है। NOW NOIDA की वेबसाइट पर हर पल खबरों का प्रवाह है। NOW NOIDA सोशल मीडिया के सभी प्रमुख प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। NOW NOIDA सबसे तेज, संतुलित और सटीक खबरों का मुख्यालय है। नोएडा ग्रेटर नोएडा की नामचीन हस्तियों के साक्षात्कार। नोएडा ग्रेटर नोएडा शहर से जुड़ी खेल-साहित्य और मनोरंजन की खबरें। आपकी सेहत, शिक्षा और संस्कृति का दर्पण होगी ये मासिक पत्रिका। आपके जीवन को बेहतर बनाने के सूत्र के साथ ज्ञान विज्ञान और अनुसंधान का समग्र संकलन NOW NOIDA पत्रिका में मिलेगा।

NOW NOIDA का उद्देश्य समाज को सच्ची सूचनाओं से सतर्क रखना है। हमारा एकमात्र लक्ष्य है सत्य से सभी का साक्षात्कार करवाना है।

संदीप कुमार ओझा
संपादक

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा, समरस समाज का उत्सव

राम अयोध्या में फिर लौट आए हैं। भव्य, दिव्य और विशाल मंदिर में रामलला विराजमान हैं। जिसके लिए पाँच सौ साल तक सनातन धर्मियों को संघर्ष करना पड़ा वहां आस्था का शिखर तैयार है रामलला के अपने जन्मस्थान में लौटने से राम राज्य के बुनियादी मूल्यों की पुनर्स्थापना हो गई है। इसी के उत्सव के लिए पूरी अयोध्या सज धज गई है। अयोध्या की सड़कें, चौराहे, राम की पैड़ी से लेकर सरयू के घाटों तक, हर कोना चमक रहा है। इंटरनेशनल एयरपोर्ट पूरा हो गया है। रेलवे स्टेशन भी मंदिर के लुक में तैयार हो गए हैं। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, पुणे, कोलकाता, नागपुर, लखनऊ, जम्मू समेत देश के कई इलाकों से अयोध्या के लिए एक हजार ट्रेनें चलेंगीं। इस दौरान लाखों लोग अयोध्या आएंगे, इसलिए लोगों ने घरों में होटल खोल लिए हैं। मंदिर के आसपास की दुकानों पर बिक्री 60% तक बढ़ गई है।

1 मिनट 24 सेकंड का मुहूर्त

अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा महज 1 मिनट 24 सेकेंड में होगी। काशी के पंडितों ने यह मुहूर्त तय किया है। द्रविड़ बंधु पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ और पं. विश्वेश्वर शास्त्री ने बताया कि 22 जनवरी को दोपहर 12 बजकर 29 मिनट 8 सेकंड से मूल मुहूर्त होगा, जो 12 बजकर 30 मिनट 32 सेकंड तक चलेगा। यानी कुल 1 मिनट 24 सेकंड का ही प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त होगा।"

16 से 24 जनवरी तक चलेंगे कार्यक्रम

प्राण-प्रतिष्ठा समारोह 16 जनवरी से शुरू होकर 24 जनवरी तक चलेगा। प्राण-प्रतिष्ठा से पहले सरयू पूजन करके उसके जल से रामलला का अभिषेक होगा। फिर उन्हें रथ से नगर भ्रमण कराया जाएगा। इससे पहले रामलला की मूर्ति को जल, फल और अन्न के बीच में एक-एक दिन रखा जाएगा।

9 दिवसीय समारोह के लिए श्रीराम यंत्र की स्थापना की जाएगी। कार्यक्रम के समापन के बाद इसे सरयू नदी में विसर्जित कर दिया जाएगा। समारोह में हवन के लिए 9 कुंड बनाए जाएंगे। पूरा कार्यक्रम काशी के विद्वानों की देखरेख में होगा।

100 विशेष मेहमान

राम मंदिर के ट्रस्ट के सदस्य कामेश्वर चौपाल ने बताया, "समारोह में विश्व के अनेक देशों के करीब 100 विशेष राम भक्तों को आमंत्रित किया जा रहा है। इसके अलावा, संतों और देशभर के राम भक्तों सहित 7 हजार लोगों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य पर्व 22 जनवरी को PM मोदी को शामिल होने के लिए आमंत्रण पत्र भेजा जा चुका है।"

4 लाख मंदिरों में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह

प्राण-प्रतिष्ठा समारोह देशभर के 4 लाख गांवों के मंदिरों में भी मनाया जाएगा। इन मंदिरों में राम नाम संकीर्तन और किसी एक मंत्र के जप के साथ मुख्य पर्व पर आरती और प्रसाद वितरण होगा। इसके साथ ही समारोह का लाइव टेलीकास्ट होगा। इससे करोड़ों भक्त इस ऐतिहासिक पल को सीधे देख पाएंगे।

पुजारी को ट्रेनिंग, अन्य मंदिरों में तैनात होंगे पुजारी

रामलला के पुजारी वही होंगे, जिनका जन्म अयोध्या में हुआ है। पुजारी को जरूरत पड़ने पर प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। अभी तक पहले से चली आ रही परंपरा के अनुसार, रामलला की पूजा होती थी। अब भव्य राम मंदिर के निर्माण और राम मंदिर ट्रस्ट के गठन के बाद यह सब नए सिरे से तय किया जा रहा है।

अभी तक रामलला के पूजन के लिए एक मुख्य पुजारी और 4 सहायक पुजारी होते रहे। अब इनकी संख्या में भी बदलाव किया जा सकता है। इसके साथ ही राम जन्मभूमि परिसर में बनने वाले अन्य मंदिरों के लिए भी पुजारियों की नियुक्ति की जानी है। इसके लिए 100 से ज्यादा वैदिक छात्रों का प्रशिक्षण के लिए चयन किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गरिमामयी उपस्थिति

रविवार को संघ परिवार की बैठक हुई। कार्यक्रम को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने के लिए इस अभियान को 4 चरण में बांटकर तैयारियां की जा रही हैं। PM मोदी आयोजन में मौजूद रहेंगे। चंपत राय ने एक्स सोशल साइट पर वीडियो भी पोस्ट किया। लिखा-प्राण प्रतिष्ठा आयोजन में संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और CM योगी आदित्यनाथ भी उपस्थित रहेंगे।

22 जनवरी की तिथि को इतिहास एक नई करवट लेगा, जिसका गवाह बनने के लिए दुनिया भर के राम भक्त अयोध्या धाम में मौजूद रहना चाहेंगे। वैसे भी रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समरस समाज की पुनर्स्थापना का पर्व है।

पूजा मिश्रा
उप संपादक

मोदी की गारंटी है

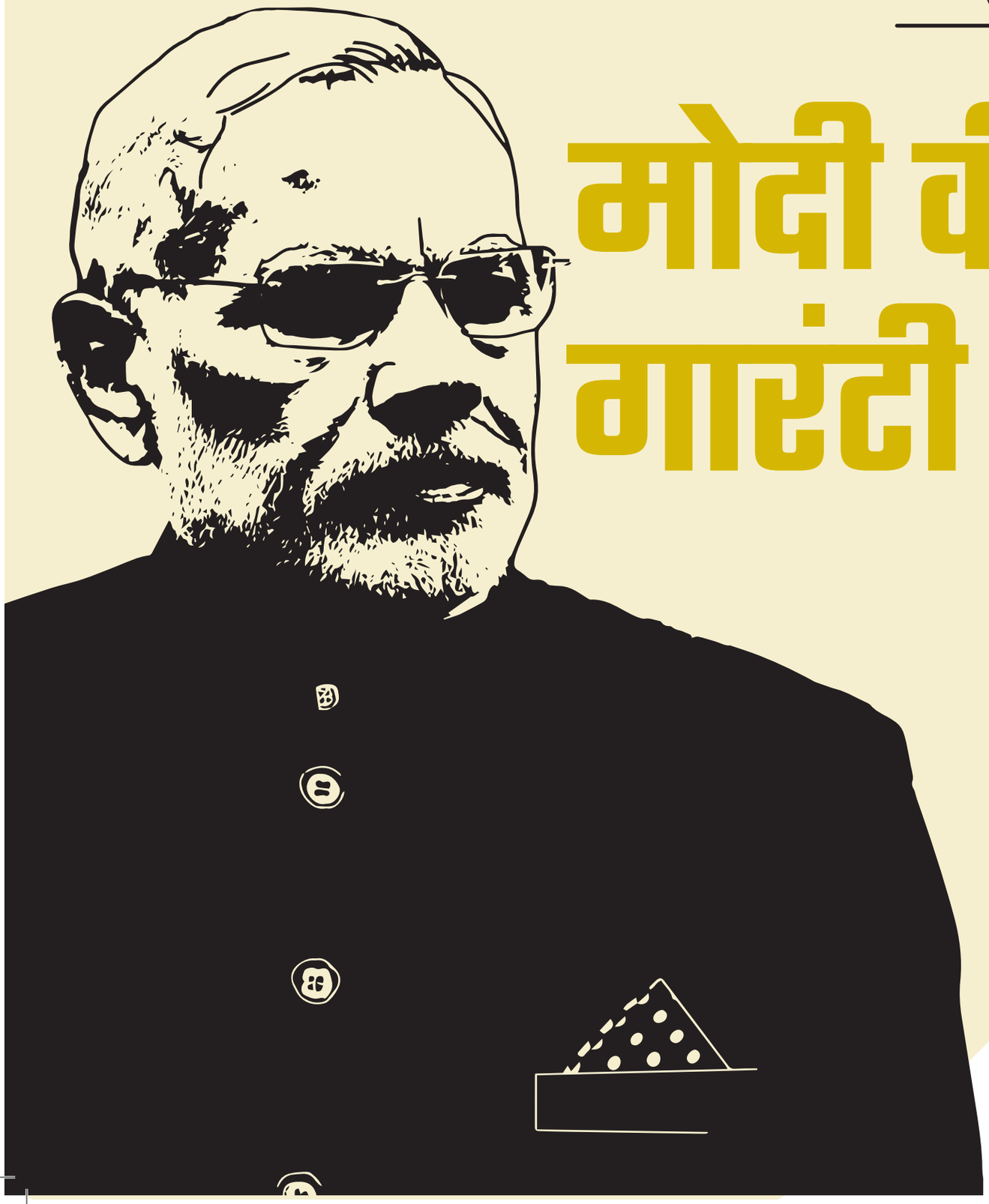

क्या है ये गारंटी, क्यों भारतीयों को नरेंद्र मोदी के नाम पर यकीन है, अब कोई तिलिस्म नहीं। है तो सिर्फ नरेंद्र मोदी विरोधियों के लिए अबूझ पहेली। जिनके पास नरेंद्र मोदी की कोई काट नहीं। जब देश आम चुनावों के दहलीज पर है तब समूचा विपक्ष नरेंद्र मोदी नाम के आगे अदना सा नजर आ रहा है। नरेंद्र मोदी के नाम पर राज्य दर राज्य लहराती भगवा पताका इसका प्रमाण है। 2024 के आगामी चुनावी नतीजों की भविष्यवाणी यूं ही नहीं भारतीय जनता पार्टी कर रही। नरेंद्र मोदी का विकल्प फिलहाल कहीं दूर दूर तक नहीं। लेकिन ये गारंटी वाला नारा चुनावी जीत का सूत्रवाक्य कैसे बना। तो जानिए तारीख थी 26 जुलाई। जगह दिल्ली का भारत मंडपम। उद्घाटन करने पहुंचे थे पीएम नरेंद्र मोदी। इस मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा था कि मेरे तीसरे टर्म में दुनिया की टॉप 3 अर्थव्यवस्था में भारत का नाम होगा। ये मोदी की गारंटी है। 2024 के बाद तीसरे टर्म में देश की विकास यात्रा तेजी से आगे बढ़ेगी। देशवासी अपने सपने अपनी आंखों के सामने पूरे होते देखेंगे। यहीं से निकली मोदी की गारंटी वाली बात। इस गारंटी का असर 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों में देखने को मिला। बीजेपी ने 3 राज्यों में बंपर जीत पाई। तेलंगाना में भी मजबूत हुई। इस बार विधानसभा चुनाव में किसी चेहरे के बजाय प्रधानमंत्री के चेहरे को आगे रखकर भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव लड़ा। विपक्ष के तमाम दावों और वादों के बीच पीए मोदी की ओर से बार-बार कहा गया मोदी की गारंटी है। चुनावी नतीजों ने साबित कर दिया कि विपक्षी वादों मोदी की गारंटी भारी पड़ गई। क्योंकि वादों को पूरा करने के मामले में नरेंद्र मोदी का ट्रैक रिकॉर्ड शानदार है। नरेंद्र मोदी विकास मॉडल पर राजानीति करते आए हैं। नरेंद्र मोदी स्टाइल पॉलिटिक्स क्या है इसे बीजेपी संसदीय दल की बैठक के वाकये समझा जा सकता है। हाल ही में पीएम मोदी जब बीजेपी संसदीय दल की बैठक में शामिल होने पहुंचे तब बीजेपी सांसदों की ओर से ये नारा लगाया गया। कि " स्वागत है भाई स्वागत है मोदी जी का स्वागत है" तब पीएम मोदी ने कहा कि मेरे नाम के आगे श्री और आदरणीय जैसे शब्द का प्रयोग न किया करें। लोग कहते हैं मोदी की गारंटी, जनता मुझे मोदी के नाम से पुकारती है। मुझे मोदी जी के नाम से बुलाकर जनता से दूर ना करें। मैं सिर्फ मोदी हूं और मुझे मोदी बुलाया करें। प्रधानमंत्री ने बैठक में ये साफ कर दिया की जनता से सीधे कनेक्ट होना पड़ेगा। जैसे जनमानस पीएम मोदी से खुद को जोड़ पाते हैं। कल्याणकारी योजनाएं से वंचितों का दिल जीतने वाले मोदी के काम से देश आश्वस्त रहता है। अब आते हैं गारंटी पर। नरेंद्र मोदी ने जो कहा वो किया। इसमें किसी को संदेह नहीं। उनके हालिया वादों पर गौर करें तो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है 5 ट्रिलियन इकोनॉमी का वादा। नरेंद्र मोदी कहते हैं कि इकोनॉमी 5 ट्रिलियन की होगी, राष्ट्र समृद्ध होगा। तो ऐसा होता दिख रहा है। पूरी दुनिया भारत की तरक्की देख रही है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन जैसों को भी नरेंद्र मोदी की गारंटी की दरकार है। नरेंद्र मोदी की जनकल्याणकारी योजनाएं उनकी गारंटी हैं।

आयुष्मान भारत योजना गरीबों के लिए जीवनदान साबित हो रही है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का लाभ लाखों लाख लोग उठा रहे हैं।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ लाखों किसानों को सीधे मिल रहा है। जिन किसानों के पास 2 हेक्टेयर से कम जमीन है। उन्हें हर वर्ष 6 हजार रुपये बैंक खाते में जा रहें हैं।

प्रधानमंत्री आवास योजना से मिल रही सब्सिडी के सहारे लोगों के घर का सपना साकार हो रहा है।

गरीब महिलाओं के मुश्किल भरे जीवन की राह उज्जवला योजना से आसान बनाई जा रही है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और जीवन ज्योति बीमा योजना से लाखों के सुरक्षा कवर दिए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना ने लाखों लोगों का पेट भरा। इस योजना के तहत 5 किलो राशन प्रति व्यक्ति हर महीने मुफ्त दिया जा रहा है।

नरेंद्र मोदी ने जनता की सेहत, खुराक से लेकर आवास तक की गारंटी ले रखी है। कोरे वादों के बजाय प्रधानमंत्री कार्यों को तरजीह देकर जननायक बने हैं। वहीं विपक्ष राजनीति की पुरानी रवायत की लकीर पर चलता दिख रहा है। जहां जातियों के गुणा भाग है। जहां ध्रुवीकरण और तुष्टीकरण की तरकीबें हैं। जहां नरेंद्र मोदी के कोसने के बहाने हैं। जबकि 2024 का चुनाव विकास की राजनीति पर तय होना है। देश को तरक्की की तरफ कौन ले जाएगा। राष्ट्र को कौन समृद्ध और शक्तिशाली बनाएगा। जनता उसे चुनेगी जो भारत का मान पूरे विश्व में बढ़ाएगा।

दिनकर पांडेय
सामाजिक कार्यकर्ता

एक अधूरे शहर की कहानी

ग्रेटर नोएडा वेस्ट, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख उपनगर, आज अपने तेजी से विकास, गगनचुम्बी इमारतों, आधुनिक ऑफिस स्पेस, मॉल श्रृंखलाओं के लिए मशहूर हो रहा है। इस क्षेत्र में पिछले एक दशक में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, खासकर रिहायशी इमारतों के मामले में जो मध्यमवर्गीय परिवार की पहुँच में थी। हालांकि, इस विकास के साथ ही कई घर खरीदारों को बिल्डरों की मनमानी और समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एक दशक के बाद भी हजारों घर खरीदारों को घर नहीं मिला है। लाखों रजिस्ट्री नहीं हो पाई हैं। मेंटेनेंस चार्ज के नाम पर वसूली हो रही है। साथ ही मुलभुत सुविधाएँ, जैसे खेल के मैदान, सरकारी अस्पताल, सरकारी स्कूल/कॉलेज, सार्वजानिक परिवहन व्यवस्था, यहाँ तक की श्मशान घाट तक नहीं बन पाए हैं। रोजाना लगने वाला ट्रैफिक जाम लोगों की मुसीबत अलग बढ़ा रहा है।

ग्रेटर नोएडा वेस्ट में कई बिल्डर अपनी लापरवाही और मनमानी से घर खरीददार की पीड़ा का कारन बने हुए हैं। रेरा कानून आने के बाद, उम्मीद जगी थी लेकिन वो नए प्रोजेक्ट तक सीमित हो गई। अमिताभ कांत कमिटी की रिपोर्ट भी आधार में लटकी है। प्रीपेड मीटर से एडवांस मेंटेनेंस लेने के बाद भी ये निवासियों को सुविधा देने के बदले असुविधाएं बढ़ा रहे हैं। कई मामलों में, बिल्डर जानबूझकर निर्माण कार्यों में देरी कर रहे हैं, जिससे ग्राहकों पर घर किराये और ईएमआई का अतिरिक्त बोझ पद रहा है। इसके अलावा, कुछ बिल्डरों ने सोसाइटी में आवश्यक सुविधाएं प्रदान नहीं की हैं। बिल्डरों के बकाये की वजह से रजिस्ट्री बंद पड़ी है। सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा लंबित था पहले, अब वो बहाना भी नहीं रहा। फिर भी प्राधिकरण और बिल्डर के विवाद का शिकार भोले भले घर खरीददार हो चुके हैं। रजिस्ट्री न होने का नुक्सान केवक घर खरीददारों को नहीं बल्कि सर्कार को भी हो रहा है, क्योंकि जितनी बार फ्लैट बिकता है उतनी बार बिल्डर एक बड़ी रकम ट्रांसफर चार्ज के रूप में लेता है, जबकि निबंधन विभाग को उसमे कुछ भी नहीं मिलता।

अग्निशमन उपकरण ठीक से लगे नहीं हैं। जहाँ लगे हैं वहां चलते नहीं हैं। अग्निशमन विभाग नोटिस देकर अपनी कर्तव्य की इति श्री कर लेता है। अधिकांश सोसाइटी का बेसमेंट पूरा नहीं बना है। लोग मंहगी पार्किंग खरीदने के बावजूद गाड़ी पार्क करने की जगह को लेकर संघर्ष कर रहे हैं।

मेट्रो के नाम पर फ्लैट बेचने वाले बिल्डर अब रैपिड रेल का सपना दिखा रहे हैं। कोविड के पहले कुछ बसें चलती थीं अब वो भी बंद हैं। अगर ऑफिस दूर है और मेट्रो से जाना चाहते हैं तो एक ही सहारा है ऑटो रिक्शा, जो बिना मीटर के ही चलते हैं।

कई महत्वपूर्ण सड़क कई जगह अचानक ख़त्म हो जाती है, जैसे हनुमान मंदिर चौराहे के पास, तिलपता के बाद 130 मीटर सड़क इत्यादि, और इसकी वजग से एक खास चौराहे पर ट्रैफिक का दबाव ज्यादा होता है।

किसी भी सार्वजनिक आयोजन के लिए कोई भी सार्वजनिक मैदान नहीं है। कई राष्ट्रीय स्तर के एथलीट अभ्यास के लिए नोएडा या ग्रेटर नोएडा जाने को मजबूर हैं, उसमे काफी समय बर्बाद होता है।

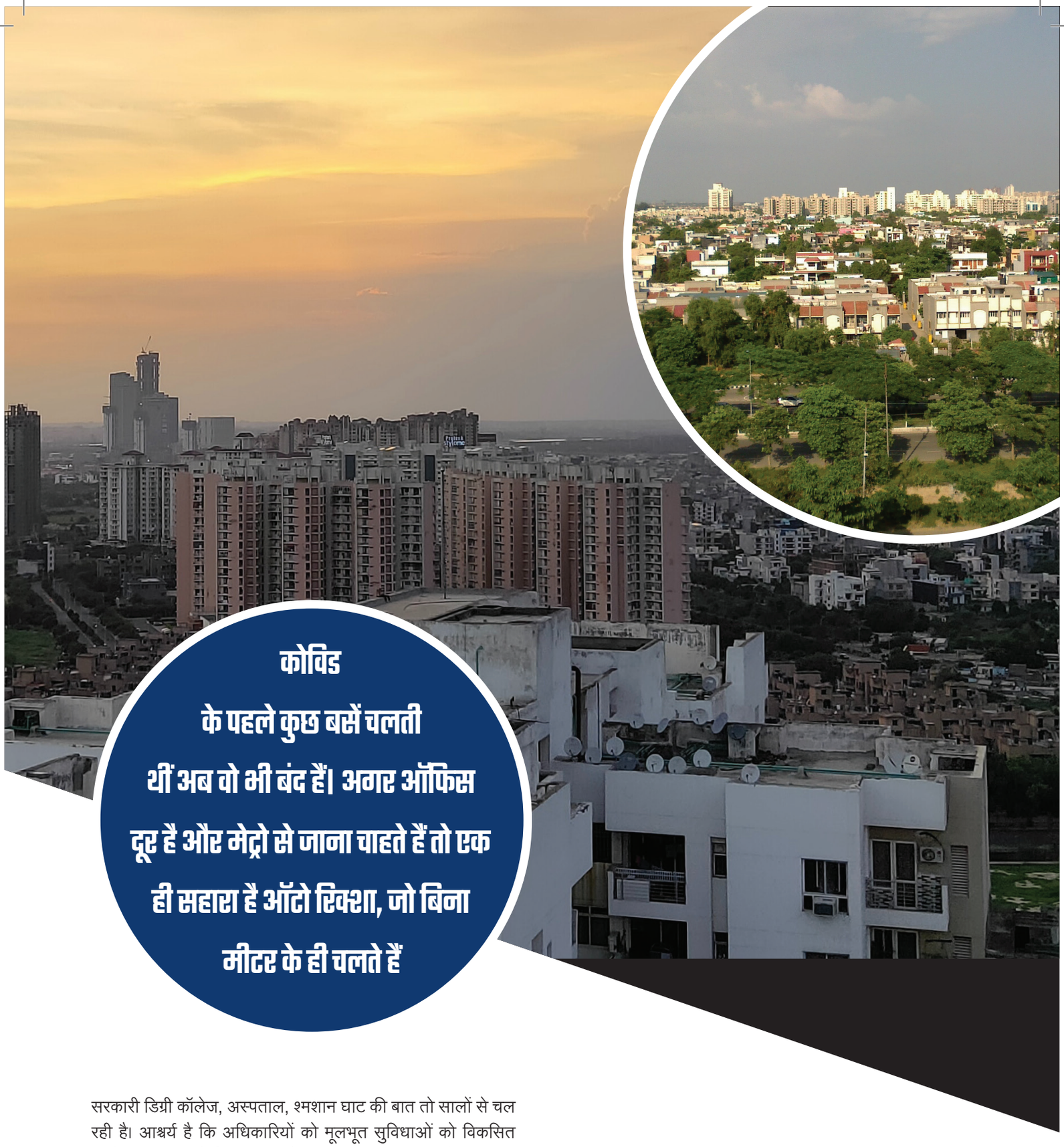

कोविड के पहले कुछ बसें चलती थीं अब वो भी बंद हैं। अगर ऑफिस दूर है और मेट्रो से जाना चाहते हैं तो एक ही सहारा है ऑटो रिक्शा, जो बिना मीटर के ही चलते हैं

सरकारी डिग्री कॉलेज, अस्पताल, श्मशान घाट की बात तो सालों से चल रही है। आश्चर्य है कि अधिकारियों को मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने का समय नहीं मिल पा रहा है। सफाई व्यवस्था नगण्य है, हर तरफ गंदगी का अम्बार है।

इस स्थिति का समाधान करने के लिए अधिकारियों को क्षेत्र भ्रमण करने के साथ निवासियों से फीडबैक लेना होगा। अवैध कब्जे के खिलाफ और सख्त क़ानूनी कदम अपनाने की आवश्यकता है।

मेट्रो और बस यथा शीघ्र चलने चाहिए अन्यथा इस क्षेत्र से पलायन होना शुरू हो जायेगा।

ग्रेटर नोएडा वेस्ट में बिल्डरों की मनमानी और घर खरीदारों की समस्या एक गंभीर विषय है, अमिताभ कांत समिति की सिफारिशें जल्दी लागू करने का प्रयास होना चाहिए। सरकार, प्राधिकरण, क्रेडाई और नेफोवा सामाजिक संगठनों को एक साथ लाकर इस समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करना होगा। इसके अलावा, ग्राहकों को भी अपने अधिकारों के बारे में और जागरूक होना चाहिए। कम से कम रेरा रेकन्सीलिएशन फोरम में शिकायत करनी चाहिए।

'जेवर'
नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनेगा
देश का गहना

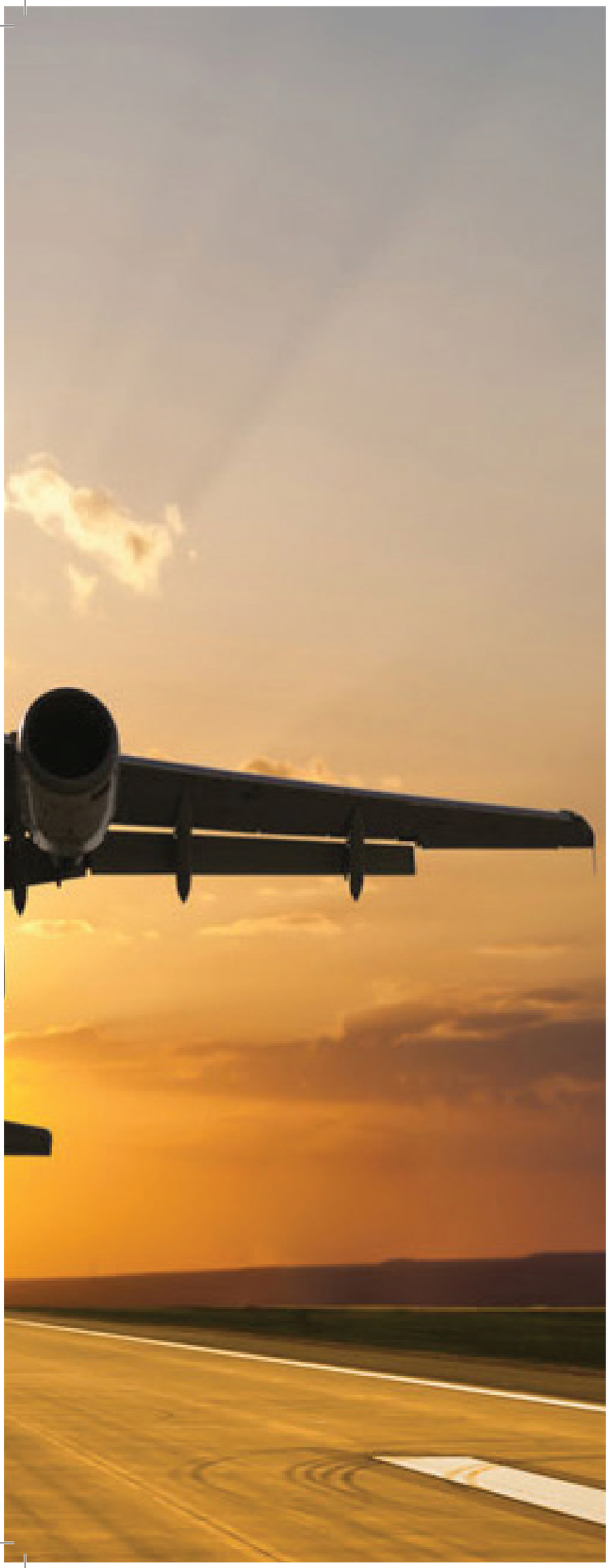

संदीप कुमार ओझा
संपादक

ये दुनिया ग्लोबल विलेज बन चुकी है। देशों की दूरियां मिट चुकी हैं। तेज रफ्तार भागती इस दुनिया से रेस लगाने में भारत भला किसी से पीछे कैसे रह सकता है। वक्त की दरकार है हमें विकसित देशों से कदमताल करनी है। तमाम देशों में व्यापार, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को तलाशने के लिए आना जाना है। इसके लिए हमें चाहिए तूफान सी तेजी। ये तेजी मिलती है आसमानी उड़ान से, हवाई सफर से, जिसके लिए भारत ने पूरी तैयारी कर ली है। जिसके तहत दिल्ली से महज 72 किलोमीटर दूर बन रहा है दुनिया का ऐसा एयरपोर्ट जिसके चर्चे इंटरनेशनल लेवल पर हो रहें हैं। ये है जेवर एयरपोर्ट। जिसे देश का गहना माना जा रहा है। जेवर एयरपोर्ट कैसे गौतम बुद्ध जिले की, उत्तर प्रदेश की और देश की तरक्की का रनवे बनने जा रहा है इसे इस पूरी रिपोर्ट के जरिए समझिए।

कहां बन रहा है जेवर एयरपोर्ट

दिल्ली से करीब 72 किलोमीटर दूर गौतमबुद्ध नगर जिले में जेवर तहसील है।

यहीं 5000 हेक्टेयर में बन रहा है नोएडा इंटरनेशल एयरपोर्ट। जिसके पहले चरण का 90% काम पूरा हो चुका है। एयरपोर्ट निर्माण में 7 हजार मजदूर जुटे हुए हैं। पहले चरण में 45 बिल्डिंग बननी थीं जिनका काम लगभग पूरा हो चुका है। रनवे और एयर ट्रैफिक कंट्रोल टावर बन कर तैयार हो चुके हैं।

एयरपोर्ट की टर्मिनल बिल्डिंग का फ्लोर भी आकार ले चुका है। जेवर एयरपोर्ट प्रोजेक्ट 4 चरणों में 30 साल में पूरा होगा। जिस पर 29 हजार 650 करोड़ रुपए खर्च होंगे। कुल 5 रनवे बनेंगे, जिन पर 7 करोड़ यात्री हर साल हवाई सफर कर पाएंगे।

पहले चरण में 5730 करोड़ रु. खर्च होने हैं। इस फेज में बन रहे एप्रन में 28 एयरक्राफ्ट खड़े होंगे। इस फेज की क्षमता 1.2 करोड़ पैसेंजर है। सालाना 90 हजार से अधिक फ्लाइट् स की जरूरत पड़ेगी। 40 साल तक इस एयरपोर्ट को स्विस कंपनी ज्यूरिख इंटरनेशनल चलाएगी। पूरा बनने पर ये दुनिया का चौथा सबसे बड़ा एयरपोर्ट होगा।

जेवर एयरपोर्ट पर ये सुविधाएं पहली बार मिलेंगी...

1.

ग्राउंड ट्रांसपोर्ट सेंटर: बस, कार, टैक्सी के साथ मेट्रो और हाई स्पीड रेल नेटवर्क यात्रियों को उपलब्ध कराने वाला ये मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्टेशन हब होगा।

3.

नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन: नेट जीरो एनर्जी, नेट जीरो कार्बन इमीशन, नेट जीरो वेस्ट और वाटर वाला ये देश का पहला एयरपोर्ट होगा। दिन की रोशनी का अधिकतम इस्तेमाल।

2.

स्विंग स्टैंड: विमान के आसान मोड़ के लिए एप्रन स्टैंड पर पहली बार स्विंग स्टैंड होगा। यानी बिना रन-वे बदले घरेलू उड़ानें अंतरराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय उड़ानें घरेलू में कन्वर्ट हो सकेंगी।

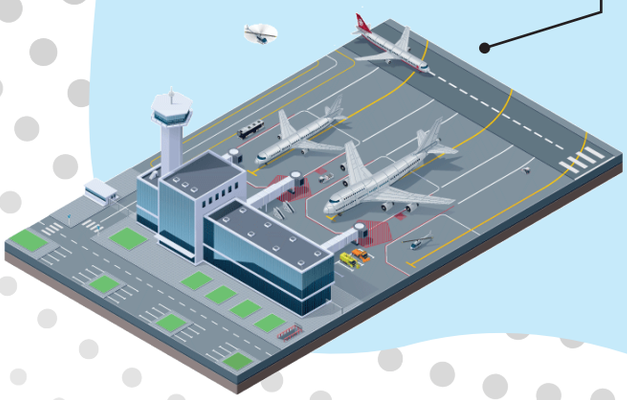

4.

एमआरओ: यानी एयरपोर्ट पर विमानों की मरम्मत और रखरखाव की सुविधा। अभी बड़ी मरम्मत के लिए विमान सीएटल या फ्रांस भेजे जाते हैं। एमआरओ के लिए सरकार एयरबस, बोइंग और अन्य कंपनियों से बातचीत कर रही है। जल्द ग्लोबल टेंडर जारी होंगे। 500 एकड़ में प्लॉट बनेंगे।

कॉन्टैक्टलैस और डिजिटल एयरपोर्ट

जेवर एयरपोर्ट की डिजाइन में फोरकोर्ट, कोर्टयार्ड, लैंडस्कैप दिखेगा। छत नदियों की तरह लहरदार बनेगी।

बोर्डिंग जोन में बड़ा ग्रीनजोन होगा। स्थानीय वास्तुकला, जलवायु अनुकूल शैली में लाउंज होगा।

जेवर एयरपोर्ट के निर्माण के साथ NCR में दो बड़े एयरपोर्ट हो जाएंगे। दिल्ली के इंदिरा गांधी हवाई अड्डे के टर्मिनल-1 का विस्तार भी हो चुका है। यानी 2024 में NCR से हर घंटे 100 से अधिक उड़ानें मुमकिन होंगी। जिनसे करीब 11.50 करोड़ यात्री सालाना सफर कर सकेंगे।

स्विट्जरलैंड स्थित ज्यूरिख इंटरनेशनल एयरपोर्ट एजी एयरपोर्ट निर्माण कर रही है। कंपनी का 40 साल तक एयरपोर्ट का रखरखाव, संचालन का अनुबंध है। नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड के साथ यूपी सरकार की एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी परियोजना है।

जिसमें 80 एकड़ में बनने वाले मल्टीमॉडल कार्गो हब के लिए एआई सैट्स के साथ अनुबंध हो चुका है। पहले चरण में कार्गो क्षमता दो लाख पचास हजार मीट्रिक टन होगी। चौथे चरण तक बढ़कर बीस लाख मिट्रिक टन हो जाएगी। एयरक्राफ्ट स्टैंड की संख्या भी 28 से बढ़कर 186 हो जाएगी।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कनेक्टिविटी को बढ़ाएगा। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से नोएडा एयरपोर्ट तक मेट्रो की डीपीआर तैयार हो रही है। ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस-वे इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एक्सप्रेस-वे को नोएडा एयरपोर्ट से जोड़ेगा। दिल्ली एयरपोर्ट से गुरुग्राम, फरीदाबाद, राजमार्ग से दिल्ली-मुंबई एक्सप्रस-वे द्वारा साहूपुरा आइएमटी चौक पर पहुंच कर सीधे नोएडा एयरपोर्ट जा सकेंगे। हर लिहाज से जेवर एयरपोर्ट तरक्की और खुशहाली का अड्डा साबित होगा। जेवर एयरपोर्ट से जुड़े अप्रेट के लिए गौतम बुद्ध नगर जिले की तीन हस्तियों का विशेष साक्षात्कार आगे पढ़िए।

यमुना प्राधिकरण के सभी गांव बनेंगे 'स्मार्ट विलेज'

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण इस नाम से आप सभी परिचित होंगे। इनके काम को भी आप देखते होंगे। लेकिन यीडा जिनकी लीडरशिप में तरक्की की नई ऊंचाइयां छू रहा है उनका नाम है अरुणवीर सिंह। यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के सीईओ अरुणवीर सिंह से नाउ नोएडा के ब्यूरो चीफ यूनुस आलम ने जाना है प्राधिकरण से जुड़े अहम सवालों के जवाब।

इस विशेष साक्षात्कार को पढ़कर आपकी तमाम उलझनें खत्म होनी तय हैं।

यूनुस आलम : अरुणवीर सिंह जी, यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में कितनी अहम परियोजनाएं चल रही हैं? और उनमें सबसे प्रमुख आप जिन्हें मानते हैं हमारे दर्शकों को उसकी जानकारी साझा कीजिए?

अरुणवीर सिंह : जेवर एयरपोर्ट में एटीसी बिल्डिंग की सात मंजिल बन चुकी है। वो लगभग पूरा तैयार है। रनवे का काम भी आखिरी चरण में है। जो टर्मिनल बिल्डिंग है उसके लिए इंटीरियर तलाशे जा रहे हैं। फरवरी के दूसरे सप्ताह में इसे डीजीसीए को हैंडओवर कर दिया जाएगा।

डीजीसीए इसमें चार से छह महीने लगाएगा सभी तरह की एनओसी जारी करने के लिए, जैसे ही एनओसी मिल जाएगी उसके बाद सामान्य उड़ाने शुरू हो जाएंगी। इन उड़ानों में घरेलू और इंटरनेशनल के अलावा कार्गो भी होंगी।

यूनुस आलम : यमुना विकास प्राधिकरण ने फैसला लिया है कि मेंटेनेंस डिवीजन बनाई जाएगी। इसके क्या लाभ होंगे?

अरुणवीर सिंह : जब कोई नया शहर बसता है, तो वहां शुरू में सिविल वर्क होते हैं। बाद में सड़कें टूटती रहती हैं उसे मेंटेन किया जाता है। हर विकसित प्राधिकरण में मेंटेनेंस विभाग होता है।

यूनुस आलम : सर प्राधिकरण गांवों के विकास के लिए क्या योजना बना रहा है ? कितने गांव में विकास की परियोजना मूर्तरूप ले चुकी हैं?

अरुणवीर सिंह : हर गांव का विकास तेजी से हो रहा है, प्रत्येक गांव को स्मार्ट विलेज बनाने का काम किया जा रहा है। गांव के विकास में 126 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं। हर साल 100 करोड़ रुपये स्मार्ट विलेज बनाने में खर्च किये जा रहे हैं। आने वाले दिनों में यमुना प्राधिकरण के सभी गांव स्मार्ट विलेज में बदल जाएंगे।

यूनुस आलम : सर हाल ही में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यमुना प्राधिकरण को जमकर सराहा आपको इसका श्रेय आपको जाता है क्या कहेंगे?

अरुणवीर सिंह : यमुना प्राधिकरण में बनाए जा रहे नये मास्टर प्लान को देखकर सीएम योगी आदित्यनाथ खुश हैं। एक रेलवे लाइन चोला से लेकर जेवर के बीच में बिछा रहे हैं। नए कार्गो वेयरहाउस का नया लॉजिस्टिक हेड लाया जा रहा है। इस क्षेत्र में ओलंपिक गांव और ओलंपिक सिटी विकसित करने का काम किया जाना है। ये नए मास्टर प्लान की विशेषताएं हैं, जिसे देखकर उसे सीएम ने काफी सराहा है। जितना औद्योगिक एलॉटमेंट हुआ है, न्यू मेडिकल डिवाइस पर जो कार्य हो रहा है, जो भारत सरकार की योजना है। उसमें जो एलॉटमेंट हो रहे हैं, उसे देखकर सीएम ने कहा कि इसे समयबद्ध रूप से पूरा करने की आवश्यकता है।

यूनुस आलम : सर एक खबर है कि यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण यीडा आगरा के पास नया शहर बसाएगा। इसका मास्टर प्लान-2031 तैयार किया जा रहा है। और क्या जानकारी है इस बारे में?

अरुणवीर सिंह : 10 हजार 500 हेक्टेयर में एक नया शहर बसाने की तैयारी है। जो स्पिरिचुअल, हेरिटेज और टूरिज्म की आवश्यकता को पूरा करे। साथ ही साथ आगरा, मथुरा, वृंदावन एक ही लाइन में पड़ता है। इस पूरे सर्किट को पूरी तरह से टूरिज्म हब के रूप में विकसित करना है। जो ग्रीन यानी की नॉन पॉल्यूटेड उद्योग हैं, जो टूरिज्म से जुड़े काम हो वो, इसे जोड़कर नया मास्टर प्लान तैयार किया गया है।

यूनुस आलम : आपका आभार अरुण जी। एक बात हमारे पाठक और जान लें कि यमुना औद्योगिक विकास प्राधिकरण के CEO डॉ. अरुणवीर सिंह को उप्र सरकार ने चार बार सेवा विस्तार दिया है। तकनीकी तौर पर चौथी बार मिले सेवा विस्तार को सेवा विस्तार नहीं माना जाता है। चूंकि शासन की सेवा यानि रेगुलर जॉब से वें पहले ही सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

धीरेंद्र सिंह
जेवर विधायक

जेवर विधायक से खास मुलाकात

गौतम बुद्ध जिले की जेवर तहसील आज कल सबसे ज्यादा चर्चा में बनी रहती है। क्योंकि यहां के विधायक धीरेंद्र सिंह बेबाक बयानी और ताबड़तोड़ एक्शन के लिए जाने जाते हैं। जेवर विधायक से उनके विधानसभा क्षेत्र और जिले की तमाम समस्याओं पर NOWNOIDA ने एक्सक्लूसिव बातचीत की है।

सवाल- विधायक जी, एक तरफ जेवर एयरपोर्ट है, जिसकी चर्चा प्रदेश ही नहीं देश दुनिया में हो रही है, दूसरी तरफ आपके विधानसभा सहित जिले के दूसरे मुद्दे, कई मुद्दे जमीनी हैं, कई सोसायटी के हैं...उद्योग के हैं...और आम लोग हैं...आप तालमेल कैसे बिठा पाते हैं?

जवाब- एयरपोर्ट एक ऐसा प्रोजेक्ट है, जो पूरे इलाके की तस्वीर को बदलने का काम करने जा रहा है। जेवर वही जगह है जहां पर भट्टा पारसौल भी है। जहां एक इंच जमीन के लिए भी गोलियां चलती थी। वहां दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा हवाई अड्डा बनने जा रहा है। पिछले तीन से चार सालों में नोएडा, ग्रेटर-नोएडा और यमुना के क्षेत्र में जमीनों की कीमत में बड़ा उछाल आया है और बड़ी बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियां यहां पर उद्योग धंधे लगा रही हैं। इंवेस्टर समिट में भी हमने देखा, सबसे ज्यादा इन्वेस्टमेंट जेवर समिट के लिए आया। अगर बात करें बिल्डर और बॉयर की समस्या की तो वो पुरानी सरकारों की देन थी। जिसे इस सरकार ने साल 2017 के बाद समझा और रेरा का गठन किया, अब रेरा को और मजबूत बनाए जाने की बात चल रही है। कई हजार लोगों की रजिस्ट्रियां इस सरकार के समय हुई हैं और इसकी नियमित समीक्षा भी होती है। कई बड़े-बड़े बिल्डर जो जिंदगी भर की खरीददारों की कमाई को हड़प गए थे उनको कानूनी दायरे में लाकर उनके खिलाफ भी कार्रवाई की गई है। कुल मिलाकर ये विजन है, देश के प्रधानमंत्री और प्रदेश के मुख्यमंत्री सीएम योगी आदित्यनाथ का, जिसकी वजह से ये क्षेत्र बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

सवाल- विधायक जी सोसायटी में आगजनी एक बहुत बड़ी समस्या है... सोसायटी में घनघोर लापरवाही पाई जाती हैं...आपने भी इस समस्या को गंभीरता से लिए लेकिन इन बिल्डरों पर नकेल कैसे डाली जा सकती है...

जवाब- मैं जनहित से जुड़े जितने भी मुद्दे हैं, उन्हें समय-समय पर उठाता रहा हूं। लिफ्ट एक्ट जो हम बनवाने जा रहे हैं, हमारे द्वारा ये उठाया गया, ये गौतमबुद्ध नगर के लिए नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश के लिए है। रही बात मेट्रो की तो बहुत बड़ी कमी उस प्लानर की है, जिन्होंने इन शहरों का प्लान बनाया। उन अधिकारियों की है, जिन्होंने इन शहरों को डिजाइन करवाया लेकिन जो मूलभूत जरूरत पब्लिक ट्रांसपोर्ट सुविधा है, उसका प्रावधान उस योजना में उन लोगों ने नहीं किया। या तो उन्हें जल्दबाजी थी या फिर वो भूल गये। अब ये समस्या लोगों के लिए जी की जंजाल बन चुकी है। इसलिए इस समस्या को सरकार के संज्ञान में लाया गया। प्राधिकरण से भी मेरी वार्ता हुई है। सभी लोग इस बात को मानते हैं कि ये बहुत बड़ी चूक हुई है। लेकिन इसे सुधारें जाने के लिए हमारे पास समय है और भविष्य में बहुत सी योजनाएं हम लाने वाले हैं। जिन पर कार्रवाई चल रही है। ताकि हर जगह पब्लिक ट्रांसपोर्ट उपलब्ध करवा सकें। इससे हमें ये भी फायदा होगा कि हम पर्यावरण को संरक्षित रख पाएंगे। आने वाले समय में जब भी हम लोगों को पब्लिक ट्रांसपोर्ट दे दें तो लोग निजी वाहन का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो निश्चित तौर पर कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और पर्यावरण के लिए काफी अनुकूल माहौल इस जिले में बन जाएगा। जनप्रतिनिधि का जो काम है, जनता से जो आवाजें आती हैं, जनता के सरोकार से जुड़े मसले को समय-समय पर उठाते रहना। यहीं हमारा संवैधानिक अधिकार होता है।

सवाल- तो आपको क्या लगता है, मेट्रो की सौगात आप ग्रेटर नोएडा वासियों को कब दे दिला पाएंगे।

जवाब- ये कहना तो मुश्किल है कि मेट्रो कब तक ग्रेटर नोएडा वेस्ट में पहुंचेगी लेकिन रैपिड रेल का जो प्लान मंजूर हुआ है गाजियाबाद से, सीएम योगी आदित्यनाथ के साथ बैठक में ये सवाल उठा कि क्यों ना इसे हम दिल्ली से जोड़ दें। क्योंकि एयरपोर्ट जाने के लिए दिल्ली से भी पैसेंजर आएंगे। इसके अलावा टैक्सी का भी यहां विचार-विमर्श चल रहा है और उसके लिए तेजी से प्रयास जारी है। जहां तक बसों की बात है तो 100 बसों इंतजाम ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण करने जा रही है। यमुना प्राधिकरण में भी हम जल्द सेवा देने जा रहे हैं जो जेवर को सीधे नोएडा से जोड़ेगी। इसके अलावा परिवहन विभाग से भी कई बसें चलाई गई हैं। जो एजूकेशनल इंस्टीट्यूट को जोड़ने के साथ नोएडा होते हुए मेरठ जाती है। पुरानी जो कमियां थी, हमारा प्रयास की इस सरकार को उसको दूर किया जाए और एक ऐसा शहर बसे जो इसने पूरी दुनिया में नाम हासिल किया है उसी के अनुरूप यहां पर पब्लिक ट्रांसपोर्ट और मूलभूत सुविधाएं हों।

सवाल- विधायक जी सोसायटी में आगजनी एक बहुत बड़ी समस्या है... सोसायटी में घनघोर लापरवाही पाई जाती हैं...आपने भी इस समस्या को गंभीरता से लिए लेकिन इन बिल्डरों पर नकेल कैसे डाली जा सकती है...

जवाब- बिल्डर और घर खरीदारों की बीच जो समस्या की जड़ है वो पुरानी सरकारों की देन है। बिल्डर और राजनीतिक लोगों को जो गठजोड़ था, वो सिर्फ और सिर्फ किसानों की जमीन को हड़पना औने-पौने दाम पर, फिर

सभी लोग इस बात को मानते हैं कि ये बहुत बड़ी चूक हुई है। लेकिन इसे सुधारें जाने के लिए हमारे पास समय है और भविष्य में बहुत सी योजनाएं हम लाने वाले हैं

उन्हें मोटा मुनाफा कमाने के लिए बिल्डर और नौकरशाही शामिल हो जाते थे, आप ग्रेटर नोएडा वेस्ट की बात कर रहे हैं, इसे औद्योगिक क्षेत्र के लिए प्लान में छोड़ा गया था। लेकिन रातों-रात अपनी जेब भरने के लिए उसके आवासीय उपयोग के लिए बिल्डरों को बेच दिया गया। चूकि प्लानिंग उसकी हुई नहीं थी रातों रात उसे बेचा गया था। आज वही वहां पर समस्या आ रही है। मैने ये भी देखा है कि बहुत सारे राजनीतिक दलों के नेताओं का पैसा इन बिल्डरों के पास रहता था और इन बिल्डरों ने घर खरीदारों से जो पैसा लिया उसे अलग इन्वेस्ट कर दिया। रेरा का गठन हमारे सरकार ने किया, उसे मजबूत बना रहे हैं। सभी बॉयर्स को ये यकीन मानना चाहिए सीएम योगी जी हर समीक्षा बैठक में उनके लिए मुस्तैद नजर आते हैं और सभी अधिकारियों को समय-समय पर प्रगति देने की कितनी मदद अब तक बॉयर्स की हुई है, अगर मॉनिटरिंग होती है तो नीचे के सभी अधिकारी उस पर काम करते हैं।

सवाल- नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को आप इस क्षेत्र के विकास के लिए कैसे देखते हैं...क्या ये एयरपोर्ट पूरे जिले को सजाने संवारने और समृद्ध बनाने में सहायक साबित हो रहा है..?

जवाब- नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट गेम चेंजर साबित होने जा रहा है। यहां औद्योगिक विकास तेजी से होने जा रहा है। आने वाले समय में ये उत्तर प्रदेश की आर्थिक राजधानी तो बनेगा ही, मुझे ऐसा लगता है कि जेवर क्षेत्र देश की जीडीपी में बड़ा हिस्सा अपना तय कर पाए। क्योंकि कोरोना काल में भी सबसे ज्यादा इन्वेस्टमेंट जेवर क्षेत्र में आया था। फिल्म सिटी हो, मेडिकल डिवाइस पार्क है, या फिर मेट्रो कोच बनाने का कारखाना हो या फिर 500 फॉर्च्यून कंपनियां हो सभी अपने उद्योग धंधे जेवर क्षेत्र में लगाना चाह रही हैं। लॉजिस्टिक का भी बहुत बड़ा हब जेवर बनने जा रहा है। आने वाला समय इस क्षेत्र का और उत्तर भारत के उन युवाओं का स्वर्णिम भविष्य है, जिनके लिए रोजगार के मौके नहीं थे। अपना व्यापार करने के वो सभी यहां लोगों के लिए उपलब्ध होंगे। ये सब सरकार चाहती है कि यहां की जनता खुशहाल हो, हर व्यक्ति के हाथ में रोजगार हो, प्रदेश संपन्न बने आपने देखा होगा पिछले 6 साल में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था तीसरे नंबर पर आ चुकी है, छठे नंबर से। अब हम एक ट्रिलियन इकोनॉमी की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं।

किसान न हों परेशान, होंगे सभी समाधान

दादरी...नाम तो सुना ही होगा। अतीत में पूरे देश में दादरी का हल्ला हो चुका है। लेकिन कुछ गलत वजहों से आज की तारीख में दादरी की चर्चा यहां हो रहे विकास से है। यहां बढ़ रहे कारोबार के साधनों से है। दादरी अब पहचानी जाती है मास्टर जी यानी तेजपाल नागर के नाम से। नाउ नोएडा संपादक संदीप ओझा ने दादरी विधायक तेजपाल नागर जी हैं विस्तार से चर्चा की। उनके विधानसभा क्षेत्र में हुए काम और बनी हुई समस्याओं पर सवाल किए हैं। ये सार्थक चर्चा ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सभी निवासियों के लिए बेहद महत्व की है।

संदीप ओझा : आपको मास्टर जी भी कहते हैं। शिक्षण के बाद आपने जनसेवा को चुना है। दोनों अवतार में आपको कौन सा कार्य ज्यादा पसंद आ रहा है ?

तेजपाल नागर : लोग हमें मास्टर जी कहकर बुलाते हैं, मुझे कोई भी विधायक जी नहीं कहता। मैं अपने आपको बड़ा गौरवान्वित महसूस करता हूं, कि मैं एक शिक्षक था, विधायक से भी बड़ा शिक्षक होता है। शिक्षक बच्चों का भविष्य बनाता है। क्योंकि शिक्षक का कार्य बच्चों का भविष्य बनाना होता है। मैंने इस क्षेत्र को इसलिए चुना ताकि जो मैंने पूरा जीवन चुना बच्चों के भविष्य बनाने का काम किया। शिक्षक भी भविष्य बनाता है और क्षेत्र का विधायक भी अपने क्षेत्र का भविष्य बनाता है। इसलिए मैंने राजनीति को चुना।

संदीप ओझा : तेजपाल नागर जी आपके विधानसभा क्षेत्र की तस्वीर कितनी बदली है ? हाल के दिनों में दादरी में क्या बड़े काम हुए हैं ?

तेजपाल नागर : साल 2017 में सबसे पहले विधायक बना। पहले कार्यकाल के दौरान मैंने देखा दादरी में सूरजपुर ग्रेटर नोएडा की तरफ जो रोड आती है, वहां पहले कार्यकाल के दौरान ओवर ब्रिज बनना शुरू हुआ। वहां भारी वाहन बंद हो गये। जिसके चलते दादरी और ग्रेटर नोएडा के लोगों को काफी असुविधा हुई। सबसे पहले मैंने साल 2017 से 10 साल पहले बाईपास जो योजना थी, कुछ दिन दूर तो बन गया था, लेकिन जीटी रोड तक उससे जुड़ना था वो जुड़ा नहीं, दादरी से ग्रेटर नोएडा के लिए कोई रास्ता नहीं था। रोज आए दिन दादरी में धरना प्रदर्शन चल रहा था। मैंने विधायक बनने के बाद उसका समाधान करवाया। अब हाईकोर्ट का स्टे भी समाप्त हो चुका है, इसके साथ ग्रेटर नोएडा से दादरी आने में भी कोई समस्या नहीं है। अब जल्द ही बाईपास भी बन जाएगा।

संदीप ओझा : मास्टर जी, दादरी में लंबे समय से सीवर लाइन की मांग उठ रही है। ये सबसे बड़ी जरूरत है लोगों की ये उम्मीद कब तक पूरी होने की संभावना है ?

तेजपाल नागर : सीवर लाइन बनवाने को लेकर मैंने चुनाव के दौरान वादा भी किया था। अगर मुझे आगे भी विधायक बनने का मौका मिला तो मैं दादरी में सीवर लाइन डलवाउंगा। पिछली योजना में मैंने सीवर का सर्वे करवा दिया था। दादरी नगर पालिका में सर्वे के लिए जो पैसा जमा होना था, उसे भी जमा करवा दिया गया है। सीवर के साथ ट्रीटमेंट प्लांट बनता है। ट्रीटमेंट प्लांट बनाने के लिए नगर पालिका को जमीन देनी थी लेकिन नगर पालिका जमीन नहीं दे पाई। अब जमीन तलाश ली गई है। नगर पालिका के सभासद और चेयरमैन मिलकर प्रस्ताव पास कर दें तो ये बहुत जल्दी बन जाएगा।

संदीप ओझा : विधायक जी, किसानों की समस्याओं का समुचित समाधान क्यों नहीं पाता ? आपके क्षेत्र में आए दिन किसान धरना प्रदर्शन पर उतर आते हैं ? कई बार तो आपने खुद जाकर इन प्रदर्शनों को खत्म करवाया है ?

तेजपाल नागर : किसानों की समस्या वास्तव में बड़ी समस्या है, ये लंबे समय से दूसरे दलों की जो सरकारें रहीं हैं ये उसकी समस्या है। लेकिन फिर सत्ता में हम आ गये, हमारे सामने समस्या बहुत लंबित और पुराने समय की समस्या है। हम किसानों से बातचीत करके इन समस्याओं के समाधान की ओर आगे बढ़ रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि नोएडा अथॉरिटी में भी और ग्रेटर नोएडा अथॉरिटी में भी सीईओ और जनप्रतिनिधि से बात करके बोर्ड मीटिंग में रखकर शासन को भेजा जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि सरकार में बात करके किसानों की जो भी समस्या हल होने लायक है, कायदे की समस्या है उसका हल हो जाएगा।

संदीप ओझा : आपकी नजर में क्या-क्या प्रमुख जन समस्या है, जिसका आपने निस्तारण करवाया हो।

तेजपाल नागर : किसानों की प्रमुख मांग में ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की तरफ से जो जमीन के बदले 6 फीसदी जमीन दी जाती थी। अब उसे प्राधिकरण ने 10 फीसदी कर दिया है। और नोएडा अथॉरिटी में 5 फीसदी प्लाट था, हाईकोर्ट ने उसे 10 फीसदी कर दिया है। काफी किसानों को 5 फीसदी बढ़ा हुआ प्लाट मिल चुका है, जबकि काफी किसान अभी बचे भी हैं। दूसरी समस्या आबादी निस्तारण की समस्या है। इन सबके प्रस्ताव शासन को भेजे जा रहे हैं। मुझे उम्मीद जैसे ही प्रस्ताव शासन को पहुंचेगा, वहां इन समस्याओं का जल्दी हल निकलवाएंगे।

संदीप ओझा : नागर जी...ग्रेटर नोएडा वेस्ट की सोसायटी के मुद्दे बहुत बड़े हैं...जैसे आए दिन सोसायटी में लगने वाली आग, बेलगाम बिल्डर,बायर के साथ होने वाली बेईमानी, इन मसलों के लिए आप लोगों ने क्या क्या प्रयास किए हैं

तेजपाल नागर : सोसायटी की प्रमुख समस्या रजिस्ट्री की है। अभी योजना आयोग की जो अध्यक्ष हैं, उन्होंने इसके लिए तीन सदस्यीय समिति बनाई है। उस समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। यूपी सरकार की तरफ से भी उसे आई डीसी को दे दिया है। आई डीसी ने गौतमबुद्ध नगर के तीनों प्राधिकरण के साथ मिलकर बैठक कर ली है। मुझे यकीन है कि रजिस्ट्री की समस्या जल्द ही दूर हो जाएगी। दूसरी सरकारों में इसे लेकर कोई काम नहीं किया गया था। योगी जी की सरकार आने के बाद इसमें कई बिल्डरों के खिलाफ कार्रवाई हो चुकी है। कई बिल्डर तो जेल भी जा चुके हैं, ये ठीक बात है कि ज्यादातर समस्याओं का हल निकल चुका है लेकिन कई ऐसी समस्याएं हैं जिनका हल नहीं निकल पाया है। रही बात आगजनी की समस्या की तो यहां पर हाईराइज बिल्डिंग बनी हुई है। पहले यूपी में कहीं भी लिफ्ट एक्ट नहीं था। हमारी सरकार में इस मुद्दे को भी उठाया गया है। बहुत जल्द ही लिफ्ट एक्ट बनकर तैयार हो जाएगा।

संदीप ओझा : सीएम योगी हाल ही में ग्रेटर नोएडा आए थे, आपके द्वारा सड़कों के सौंदर्यीकरण को लेकर बात हुई, उस पर अभी तक क्या काम हुआ ?

तेजपाल नागर : मुख्यमंत्री जी समीक्षा बैठक में गौतमबुद्ध नगर आए थे। मैंने किसानों की समस्या, बिल्डर बायर की समस्या और सड़कों की समस्या को उनके सामने रखा था। सीएम ने इन समस्याओं के निस्तारण को लेकर अधिकारियों निर्देश दिये हैं।

संदीप ओझा : आपका बहुत बहुत धन्यवाद और आभार तेजपाल नागर जी। हम उम्मीद करते हैं आपके साक्षात्कार से हमारे पाठकों को समुचित जवाब मिल जाएंगे।

मनीष कुमार वर्मा,
जिलाधिकारी, गौतमबुद्ध नगर

नशा माफिया पर नकेल डालना पहला टास्क

गौतम बुद्ध नगर जिले को मिनी इंडिया कहें तो गलत नहीं होगा। यहां देश के कोने कोने से आए प्रवासी बसे हैं। रोजगार के अवसरों ने गौतम बुद्ध नगर जिले की आबादी को बूस्टर डोज लगा दिया है। ऐसे में जिले की व्यवस्था, समाजाकि समस्याएं, और प्रशासन को बखूबी संभालना आसान काम नहीं। जिनके कंधे पर गौतम बुद्ध जिले की पूरी व्यवस्था है वो हैं मनीष कुमार वर्मा। NOW NOIDA अपडेट ने गौतम बुद्ध जिलाधिकारी से समय मांगा था। आपकी पत्रिका को एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में मनीष कुमार वर्मा जी ने बहुत सी अहम बातें बताई हैं। जिले के हर नागरिक से जुड़े सवालों वाला ये साक्षात्कार पठनीय है ।

यूनुस आलम, नोएडा ब्यूरो चीफ का सवाल : *मनीष जी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सपना विकसित भारत बनाना है। जिसके लिए उन्होंने विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरुआत भी की है। आपके जिले में इसे किस तरह आगे बढ़ाया जा रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का पूरा अपडेट हमारे पाठकों को दीजिए।*

मनीष कुमार वर्मा : केंद्र की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की रणनीति जिला प्रशासन ने तैयार कर रखी है।

हमारी तैयारी आगामी 26 जनवरी तक की है। विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर जिला प्रशासन दो कार्यक्रम सुबह के समय और दो कार्यक्रम शाम के समय रख रहा है। इसके लिए अधिकारियों को अलग-अलग कार्यक्रमों की जिम्मेदारी दी गई है। 17 से अधिक योजनाएं हैं, उन्हें चिन्हित कर उनके जो संबंधित अधिकारी हैं, वो मौके पर पहुंचते हैं और लाभार्थियों को इसका लाभ दिलाने का काम कर रहे हैं। इसमें जगह पर ही रजिस्ट्रेशन की व्यवस्था है, अगर किसी भी लाभार्थी की कोई शिकायत है तो उसे तुरंत सुनकर उसके निवारण मौके पर ही करने के निर्देश हैं। इसके लिए प्रत्येक दिन इसकी समीक्षा की जाती है कि कितने लाभार्थी इन योजनाओं के तहत लाभान्वित हुए और कौन-कौन सी योजनाओं में कितने पंजीकरण हुए हैं।

यूनुस आलम, नोएडा ब्यूरो चीफ का सवाल : *मनीष जी न्यू नोएडा प्रोजेक्ट की हकीकत क्या है ?*

मनीष कुमार वर्मा : न्यू नोएडा प्रोजेक्ट पर तेजी से काम चल रहा है। इसमें कई गांव गौतमबुद्ध नगर के हैं, कुछ बुलंदशहर के गांव हैं। प्रोजेक्ट के ड्राफ्ट करीब करीब तैयार हो चुका है। प्रोजेक्ट को जमीनी स्तर पर लाने के लिए तेजी से प्रयास हैं। न्यू नोएडा हर लिहाज से बेहतरीन प्रोजेक्ट साबित होगा।

यूनुस आलम, नोएडा ब्यूरो चीफ का सवाल : *आपके जिले में इंटरनेशनल एयरपोर्ट तैयार हो रहा है। जेवर में बन रहे एयरपोर्ट पर आप हमारे पाठकों को क्या खुशखबरी देने जा रहे हैं ?*

मनीष कुमार वर्मा : नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पहले चरण का काम लगभग तैयार हो चुका है। रन-वे बन चुका है। टाइम लाइन के मुताबिक ही फरवरी में इसके पहले चरण का काम पूरा हो जाएगा। माननीय मुख्यमंत्री के निर्देश के अनुसार काम समय-सीमा में पूरा हो जाएगा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पूरे जिले का गौरव साबित होगा इसमें संदेह नहीं।

यूनुस आलम, नोएडा ब्यूरो चीफ का सवाल : *मनीष जी इस हाईटेक शहर में नौजवान पीढ़ी नशे के दलदल में धंसती चली जा रही है... हाल फिलहाल में नशे के कई रैकेट का भंडाफोड़ किया गया। हालांकि ये नेक्सेस जिले में बहुत बड़े लेवल तक फैल चुका है। गंभीर समस्या ये कि इसमें कॉलेज और यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राएं भी शामिल हैं। इस पर जिला प्रशासन किस स्तर पर तैयारी कर रहा है। इस मुद्दे पर योगी आदित्यनाथ ने भी गंभीर चिंता जताई थी और जिले में नशा-मुक्ति केंद्र खोलने के लिए जगह चिन्हित करने के निर्देश भी दिये थे..क्या प्रगति है इस मामले में ?*

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पहले चरण का काम लगभग तैयार हो चुका है। रन-वे बन चुका है। टाइम लाइन के मुताबिक ही फरवरी में इसके पहले चरण का काम पूरा हो जाएगा

मनीष कुमार वर्मा : जो स्पेशलाइज एजेंसीज हैं, हम उनसे संपर्क में हैं। इसमें कुछ दिल्ली की एजेंसी की नाम शामिल हैं, जो इस क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रही हैं। इसके लिए जिले में जगह की तलाश की जा रही है, जहां पर रिहैबिलिटेशन सेंटर (डी-एडिक्शन सेंटर) बनाया जाएगा। वहां पर एक्सपर्ट की मदद से जो नशे की आदि हो चुके हैं, उन्हें डि-एडिट करने की कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा जागरूकता एक बहुत बड़ा माध्यम है, खासकर कॉलेज के जो छात्र नशे की लत में पड़ते हैं। उन्हें जागरूक करने के लिए हर कॉलेज, सभी यूनिवर्सिटी में एक इंटरनल कमेटी बना रहे हैं। डीएम ने बताया इसमें कॉलेज और यूनिवर्सिटी के अकैडिमिशन भी जिला प्रशासन के संपर्क में हैं। उन्होंने बताया जल्द ही इंटरनल कमेटी बनाई जाएगी। इसके अलावा काउंसलिंग के लिए भी प्रयास किये जाएंगे, ताकि जो छात्र या फिर छात्राएं नशे की आदि हो चुके हैं, उन्हें काउंसलिंग कर सुधारा जा सके और नशे की लत में छात्र या फिर छात्राएं ना पड़ें। नशा माफिया के खिलाफ हम सख्त ऐक्शन ले रहे हैं।

गौतम बुद्ध जिलाधिकारी के पास ज्यादा वक्त नहीं था। हालांकि हमारे सवाल अभी बाकी हैं। पत्रिका में जिलाधिकारी मनीष वर्मा जी के साक्षात्कार वक्त वक्त पर आपके लिए हम लाते रहेंगे।

“अपराधियों के हौसले पस्त हुए हैं”

आनंद कुलकर्णी
ज्वाइंट सीपी, लॉ एंड ऑर्डर

नोएडा और ग्रेटर नोएडा जितने आधुनिक शहर हैं, उतने ही शातिर और तेज दिमाग हैं यहां के अपराधी। पेशेवर अपराधियों के गुनाह के तरीके और उनके हाईटेक क्राइम की काट तलाशना बिल्कुल भई आसान काम नहीं। नोएडा पुलिस जिले में अपराधियों के ऐसे ऐसे कारनामों से आए दिन परिचित होती है जो उन्हें भी हैरान करती हैं। ऐसे में जिले में कानून का राज कायम रखना कितना चैलेंजिंग है ? अपराध रोकने के लिए कितना जतन करना पड़ता है इसे जानने के लिए NOW NOIDA ने बात की है नोएडा के ज्वाइंट सीपी लॉ एंड ऑर्डर आनंद कुलकर्णी से। NOW NOIDA संवाददाता साजिद अली को दिए इस विशेष साक्षात्कार में आनंद कुलकर्णी ने जो कहा पढ़िए।

साजिद अली : जिले में लॉ एंड ऑर्डर बनाए रखने और अपराधियों के हौसले तोड़ने के लिए किस तरह की कार्रवाई की जा रही है ?
आनंद कुलकर्णी : जिले में इस साल सभी तरह के आपराधिक मामलों में काफी गिरावट देखी गई। पुलिस बहुत हद तक इसमें अंकुश लगाने में सफल रही है। पेट्रोलिंग हर जगह पर बढ़ाई गई है। किसी तरह के अपराध पर लगाम लगाने के लिए दिन रात पुलिस तत्पर रहती है। इसके अलावा महिला संबंधी अपराध में जिले में काफी कमी देखी गई है। अब पुलिस महिलाओं के साथ हो रहे अपराध पर तुरंत एक्शन लेती है। ताकि महिलाएं जिले में पूरी तरह से खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। अपराधियों पर जल्द और सख्त कार्रवाई की जा रही है, जिससे जिले में अपराध काफी हद तक कम हुआ है। इसके अलावा अलग-अलग तरह के ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। जिसकी मदद से भी काफी हद तक हर तरीके के अपराध में कमी आई है।

साजिद अली : साल 2024 में पुलिस ने किस तरह का रोडमैप तैयार किया है, जिले में कानून-व्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिए ?
आनंद कुलकर्णी : सभी तरह की मुहिम जो अभी पुलिस विभाग द्वारा चलाए जा रहे हैं। उसमें और तेजी लाई जाएगी। जो अलावा जो भी अपराधी सत्यापन के उपरान्त एक्टिव पाए जाएंगे,विधिक तरीके से उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा जिले में ऑपरेशन कन्विक्शन और ऑपरेशन दृष्टि चल रही है। इस ऑपरेशन को नए साल से उसको और गतिशील बनाया जाएगा। जिससे अधिक से अधिक अपराधियों को सजा दिलाई जा सके।

साजिद अली : आपने 6 नए थानों का प्रस्ताव भेजा था उसमें कितनी प्रगति हुई है?
आनंद कुलकर्णी : वर्तमान में जिले में 6 नए थाने पाइप लाइन में हैं।

उत्तर प्रदेश की आर्थिक राजधानी नोएडा में मीडिया जगत का एक नया अध्याय लिखा गया। नोएडा में प्रेस क्लब ऑफ़ गौतमबुद्ध नगर द्वारा मीडिया समिट 2023 का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कई वरिष्ठ पत्रकार, राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी और प्रबुद्ध वर्ग के लोग शामिल हुए। सेक्टर-125 स्थित एमिटी विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित इस सम्मेलन में मीडिया और राजनीति के बदलते संबंध को लेकर परिचर्चा का भी आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और गौतमबुद्ध नगर के सांसद डॉ महेश शर्मा ने वीडियो संदेश के माध्यम से पत्रकारों को संबोधित किया। ब्रजेश पाठक ने कहा कि देश के सभी जाने-माने पत्रकार नोएडा में रहते हैं। प्रेस क्लब ऑफ गौतमबुद्ध नगर ने माध्यम से उन्हें मंच दिया गया है। इसके लिए सभी को बहुत बधाई। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना और दीप प्रज्ज्वलन के साथ की गई।

ग्रेटर नोएडा में स्थित गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और सीएम योगी आदित्यनाथ

कमिश्नरेट में शिकायतकर्ताओं की प्यास बुझाएगा आईओसीएल के प्रयास से लगाए वाटर कूलर

अपराधियों का ईगल करेगा पीछा

उनके प्रस्ताव भेजे जा चुके हैं। कानून-व्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिए जिले में नए पुलिस स्टेशन के गठन की तैयारी की गई है। जैसे ही इस मामले में कोई अपडेट आता है,जरूर अवगत करवाया जाएगा।

साजिद अली : महिला थाना बनाने को लेकर क्या तैयारी है ?

आनंद कुलकर्णी : हर जोन में एक महिला थाना बनाने की तैयारी है। इसके अलावा नए पिंक बूथ भी बनाए जा रहे हैं और इसके अलावा एक्सप्रेस-वे पर चौकियां बनाई जा रही हैं। पुलिस की मौजूदगी जगह-जगह करने की दृष्टि से इस तरह के प्रयास किये जा रहे हैं। इसका प्रभाव भी दिखाई देना शुरू हो गया है। जैसा मैंने पहले आपको बताया कि पुलिस के अलग-अलग तरह से किये जा रहे प्रयास से अपराध में कमी भी आई है। इसके अलावा सार्वजनिक सुरक्षा की धारणा विकसित हुई है। जिससे आज सभी लोग कहीं भी जाने में सुरक्षित महसूस करते हैं।

विशेष राज्य' की राजनीति क्यों ?

स्पेशल स्टेटस मतलब विशेष राज्य का दर्जा। तमाम राज्य इसकी मांग समय समय पर करते रहते हैं। आखिर किसी राज्य को विशेष श्रेणी का दर्जा कैसे मिलता है, जिसकी मांग बिहार कर रहा है, जानें क्या है नियम

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल ने बिहार को विशेष श्रेणी का दर्जा (एससीएस) देने की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पास किया है। ये प्रस्ताव बिहार में जाति-आधारित सर्वेक्षण के आधार पर लाया गया है।

सर्वेक्षण में पता चला है कि बिहार की लगभग एक-तिहाई आबादी गरीबी में जी रही है। इसिलए नीतीश सरकार ने बिहार को विशेष श्रेणी का दर्जा देने की मांग केंद्र सरकार से की है। आइए जानते हैं कि विशेष श्रेणी का दर्जा (एससीएस) किस आधार पर राज्यों को दिया जाता है।

राज्य में इन पांच स्थितियां होने पर मिलता है विशेष श्रेणी का दर्जा

केंद्र सरकार किसी राज्य को भौगोलिक, सामाजिक या आर्थिक नुकसान का सामना करने और विकास में सहायता के लिए विशेष श्रेणी का दर्जा देती है।

उल्लेखनीय है कि एससीएस अधिनियम को 1969 में पांचवें वित्त आयोग (एफसी) की सिफारिश पर पेश किया गया था। जिसके तहत पांच कारणों, जैसे पहाड़ी और कठिन इलाका, कम जनसंख्या घनत्व और/या जनजातीय आबादी का बड़ा हिस्सा, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के साथ रणनीतिक स्थान, आर्थिक और ढांचागत पिछड़ापन और राज्य की गैर-व्यवहार्य प्रकृति एससीएस देने से पहले वित्त पर विचार किया जाता है।

इन राज्यों को मिल चुका है एससीएस

बता दें कि 1969 में जम्मू और कश्मीर, असम और नागालैंड को SCS प्रदान किया गया। इसके बाद, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड सहित आठ और राज्यों को पूर्ववर्ती राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा एससीएस दिया गया है।

एससीएस से राज्य को मिलता है यह लाभ

बतातें चले एससीएस प्राप्त राज्यों को गाडगिल मुखर्जी फार्मूला के आधार पर अनुदान मिलता है. इसके तहत कुल केंद्रीय सहायता का लगभग 30 फीसद एससीएस राज्यों को दिया जाता है। हालांकि, योजना आयोग की समाप्ति और 14वें, 15वें वित्त कमीशन की सिफारिशों के बाद एससीएस राज्यों को ये सहायता सभी राज्यों को बांटी जाने वाले फंड के बराबर कर दिया गया है. वहीं, केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को केंद्र की योजनाओं दिया जाने वाला फंड 90:10 के अनुपात में बांटा जाता है। वहीं, इसके अलावा, नए उद्योग स्थापित करने के लिए निवेश लाने के लिए कस्टम ड्यूटी और एक्साइज ड्यूटी, इनकम टैक्स और कॉर्पोरेट टैक्स में भी छूट मिलती है.

इसलिए बिहार को जरूरी है एससीएस

नीतीश से पहले कई राजनीतिक दलों ने बिहार को विशेष श्रेणी दर्जा देने की वकालत की है। बिहार में गरीबी और पिछड़ापन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, सिंचाई के लिए पानी की कमी, उत्तरी क्षेत्र में लगातार बाढ़ और राज्य के दक्षिण हिस्से में पड़ने वाले सूखा को दर्शाते हुए एससीएस की वकालत हो रही है. इसके अलावा बिहार और झारखंड अलग होने के कारण रोजगार और निवेश के अवसरों में कमी आ गई है. इसके साथ ही लगभग 54 हजार की जीडीपी के साथ बिहार लगातार सबसे गरीब राज्यों में से एक है, जो एससीएस के लिए अहम है।

ओम प्रकाश सिंह, विशेष संवाददाता

पूजा मिश्रा
उप संपादक

समान नागरिक संहिता की जरूरत

इसी साल जून का महीना था। भोपाल में गर्मी ने लोगों को हलकान कर रखा था। बावजूद इसके नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम में भारी भीड़ जुटी थी। पीएम मोदी ने मंच पर भाषण शुरू किया। देश की मुस्लिम महिलाओं के कष्ट और पीड़ा को बयां करते करते प्रधानमंत्री ने जो कहा उसने उनके अगले कदम की आहट मिल गई। प्रधानमंत्री ने देश में समान नागरिक संहिता की जरूरत पर जोर दिया।

पीएम मोदी ने कहा था, "सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार कहा है. सुप्रीम कोर्ट डंडा मारता है. कहता है कॉमन सिविल कोड लाओ. लेकिन ये वोट बैंक के भूखे लोग इसमें अड़ंगा लगा रहे हैं. लेकिन भाजपा सबका साथ, सबका विकास की भावना से काम कर रही है."

विधि के शासन के अनुसार, सभी नागरिकों हेतु एक समान विधि होनी चाहिये. लेकिन समान नागरिक संहिता का लागू न होना एक प्रकार से विधि के शासन और संविधान की प्रस्तावना का उल्लंघन है

इसके आगे प्रधानमंत्री ने कहा, "जो 'ट्रिपल तलाक़' की वकालत करते हैं, वे वोट बैंक के भूखे हैं और मुस्लिम बेटियों के साथ घोर अन्याय कर रहे हैं. 'ट्रिपल तलाक़' न सिर्फ़ महिलाओं की चिंता का विषय है, बल्कि यह समूचे परिवार को नष्ट कर देता है."

उन्होंने कहा, "जब किसी महिला को, जिसका निकाह बहुत उम्मीदों के साथ किसी शख्स से किया गया था, 'ट्रिपल तलाक़' देकर वापस भेज दिया जाता है."

"कुछ लोग मुस्लिम बेटियों के सिर पर 'ट्रिपल तलाक़' का फंदा लटकाए रखना चाहते हैं, ताकि उन्हें उनका शोषण करते रहने की आज़ादी मिल सके."

यूनिफॉर्म सिविल कोड पर बहस आज की तारीख की नहीं है। ये बीजेपी का एजेंडा है। जैसे राम मंदिर। जैसे 370। वैसे ही UCC। जब बीजेपी जनसंघ थी तब से बीजेपी के घोषणापत्र में UCC की जगह पक्की थी।

साल 1967 के आम चुनाव में भारतीय जनसंघ ने चुनावी मेनिफ़ेस्टो में पहली बार 'समान नागरिक संहिता' का उल्लेख किया था.

इसके बाद साल 1980 में बीजेपी की स्थापना के बाद यूसीसी की मांग ने जोर पकड़ना शुरू किया। लेकिन गठबंधन की राजनीति के दौर में UCC का मुद्दे को ज्यादा तवज्जो दूसरे दलों ने दी नहीं। केंद्रीय फलक पर 2014 में नरेंद्र मोदी के उदय के बाद UCC पर बीजेपी फिर से मुखर हो गई। एक एक कर अहम मसलों को हल करने के बाद नरेंद्र मोदी के बचे हुए काम में UCC का नंबर भी अब लगता है आ गया है।

ऐसे में ये समझना जरूरी है कि आखिर ये समान नागरिक संहिता है क्या ?

समान नागरिक संहिता

यूनिफार्म सिविल कोड यानी समान नागरिक संहिता में देश के सभी नागरिक के लिए एक समान कानून होता है. चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का क्यों न हो. समान नागरिक संहिता का मतलब धर्म और वर्ग से ऊपर उठकर पूरे देश में एक समान कानून लागू करने से है. समान नागरिक संहिता में शादी, तलाक, जमीन जायदाद के बटवारे और उत्तराधिकार-गोद लेने जैसे सामाजिक मुद्दे सभी एक कानून के अंतर्गत आ जाते हैं. इसमें धर्म के आधार पर कोई अलग कोर्ट या अलग व्यवस्था नहीं होती है. जबकि अभी देश में सभी धर्मो के लिए अलग अलग नियम हैं. सम्पति, तलाक़ और विवाह के नियम हिन्दुओं ,मुस्लिमो और ईसाइयो के लिए अलग हैं. भारत में गोवा एकमात्र ऐसा राज्य है जहा सामान नागरिक सहिंता लागू है .

समान नागरिक संहिता की सख्त जरूरत क्यों है इसे भी समझिए।

समान नागरिक संहिता से समाज में एकरूपता लाने में मदद मिलेगी। समान नागरिक संहिता लागू हो जाने से विवाह, गोद लेने की व्यवस्था, तलाक़ के बाद महिलायों को उचित भरण पोषण देने में समानता लाई जा सकेगी। संविधान के अनुच्छेद 44 में नागरिक संहिता की चर्चा की गई है। इससे साफ़ है कि संविधान निर्माता ये चाहते थे कि देश में यूनिफार्म सिविल कोड लागू हो।

संविधान में मूल अधिकारों में विधि के शासन की अवधारणा विद्यमान है लेकिन इन्हीं अवधारणाओं के बीच लैंगिक असमानता जैसी कुरीतियां भी व्याप्त हैं। विधि के शासन के अनुसार, सभी नागरिकों हेतु एक समान विधि होनी चाहिये. लेकिन समान नागरिक संहिता का लागू न होना एक प्रकार से विधि के शासन और संविधान की प्रस्तावना का उल्लंघन है।

हलांकि कई विपक्षी पार्टियों खासकर कांग्रेस और वामपंथी खेमे के अंदर ही UCC पर विरोध और समर्थन के अलग-अलग सुर सुनाई देते हैं। खुद को धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक रूप से प्रगतिशील राजनीति की चैम्पियन कहनेवाली कांग्रेस पारिवारिक कानूनों में सुधार के मुद्दे पर कट्टरपंथी, पिछड़ी और महिला विरोधी सोच के साथ खड़ी नज़र आती हैं। ऐसे में ये पार्टियां भी धार्मिक-सामाजिक सुधारों की राह रोकने में विभिन्न धर्मों-समुदायों के धार्मिक संगठन, धर्मगुरु, पर्सनल लॉ बोर्ड और उसके कर्ताधर्ता की तरह ही काफी हद तक जिम्मेदार हैं।

डॉ. ऐ.के सिंह
प्रोफेसर, पतांजलि
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 उत्तर प्रदेश मे इसकी यथार्थतता

21वीं सदी के शुरुआत मे समूचे देश के बड़े शहरों में जनसंख्या बढ़ने से आवासीय भवनों की समुचित उपलब्धता की आवश्यकता सरकारों ने महसूस की। ऐसी ही आवश्यकता राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र दिल्ली मे भी महसूस की गई। दिल्ली मे बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आवास व्यवस्था को सुदृढ़ कराने हेतु एनसीआर प्लानिंग बोर्ड द्वारा दिल्ली, हरियाणा व उत्तर प्रदेश को मिला कर आवासीय सुविधाओं को बढ़ाने का खाका तैयार किया गया। इस प्लानिंग मे उत्तर प्रदेश के दो जिले गौतमबुद्ध नगर जिसमें नोएडा और ग्रेटर नोएडा तथा गाजियाबाद प्रमुख रूप से शामिल रहे।

आमूमन जैसा कि हम सभी जानते है कि सरकार की योजनाओं को सरकार से ज्यादा योजनाओं से मोटी कमाई करने वाले व्यवसायी वर्ग जानता है और यहां भी ऐसा ही हुआ। साल 2000 और उसके आसपास नज़र डाली जाए तो बहुत सारे बिल्डरों की कम्पनियों का रजिस्ट्रेशन मिलेगा। हालांकि आने वाले वर्षों मे आवासीय जरूरते कई गुना बढ़ने का सरकार के अनुमान का फायदा उठाने हेतु बिल्डरों ने कमर कस रखी थी। इधर गौतम बुद्ध नगर और गाजियाबाद के प्राधिकरणों ने बहुत सारे ग्रुप हाउसिंग प्रोजेक्ट लॉन्च किए। आवासीय जरूरतों की पूर्ति के नाम पर इन प्राधिकरणों द्वारा अनेकों छूट और सुविधाएं दी गई। कुछ एक बिल्डरों को छोड़ दिया जाए तो अधिकतर ने खरीददारों से आवास के नाम पर पैसा लेकर या तो मकान नहीं दिया या तो मकान दिया तो अनुबंध के अनुसार नहीं दिया।

समस्या कब सामने आई?

जिन खरीददारों को घर नहीं मिला या अनुबंध के अनुसार घर नहीं मिला वो सभी लोग प्राधिकरण के अधिकारियों और सरकार से बिल्डर की मनमानी की शिकायत करने लगे। ऐसी शिकायतों पर अधिकारी ध्यान नहीं देते थे जिससे सरकार के पास तक शिकायते पहुंचने लगी। केन्द्र सरकार के पास पूरे देश से बिल्डरों की मनमानी की शिकायते पहुँचने लगी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए डॉ. मनमोहन सिंह जी की सरकार में भू-सम्पदा क्षेत्र के लिए कानून का प्रस्ताव पहली बार जनवरी, 2009 में राज्यों और संघ क्षेत्रों के आवास मंत्रियों की राष्ट्रीय बैठक में पारित किया गया था। आवासीय और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय ने इस संबंध में आठ वर्षों के लंबे प्रयासों के बाद घरेलू खरीदारों की रक्षा करने के साथ-साथ भू-सम्पदा (रियल एस्टेट) में पूँजी निवेश को बढ़ावा देने में मदद करने वाला यह अधिनियम राज्यसभा में 10 मार्च 2016 को तथा लोकसभा में 15 मार्च 2016 को पारित हुआ। अधिनियम की अनुमति 25 मार्च 2016 लिखित रूप से जनमानस के सामने आई।

अधिनियम की अनिवार्यता

01 मई, 2016 को प्रभावी होने वाले इस अधिनियम में अधिनियम के कुल 92 अनुच्छेदों के 69 को अधिसूचित किया। 01 मई, 2016 को अधिनियम के प्रारंभ होने की अधिसूचना के अनुसार, इस अधिनियम के अंतर्गत नियमों को केन्द्र और राज्य सरकारों के द्वारा अधिनियम की धारा 84 के अंतर्गत 31 अक्टूबर, 2016 तक अधिकतम छह माह की अवधि के भीतर नियम तैयार करने होंगे। भारतीय संसद का एक अधिनियम है, इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान इस प्रकार हैं

1- राज्य स्तर पर 'रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण' (RERA) के गठन का प्रावधान।

2- त्वरित न्यायाधिकरणों द्वारा विवादों का 60 दिन के भीतर समाधान।

3- 500 वर्ग मीटर या 8 अपार्टमेंट तक की निर्माण योजनाओं को छोड़कर सभी निर्माण योजनाओं को रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण में पंजीकरण कराना अनिवार्य है।

4- ग्राहकों से ली गई 70 प्रतिशत धनराशि को अलग बैंक में रखने एवं उसका केवल निर्माण कार्य में प्रयोग का प्रावधान।

5- परियोजना संबंधी जानकारी जैसे-प्रोजेक्ट का ले-आउट, स्वीकृति, ठेकेदार एवं प्रोजेक्ट की मियाद का विवरण खरीददार को अनिवार्यतः देने का प्रावधान।

6- पूर्वसूचित समय-सीमा में निर्माण कार्य पूरा न करने पर बिल्डर द्वारा उपभोक्ता को ब्याज के भुगतान का प्रावधान। यह उसी दर पर होगा जिस दर पर वह भुगतान में हुई चूक के लिए उपभोक्ता से ब्याज वसूलता।

7- रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण के आदेश की अवहेलना की स्थिति में बिल्डर के लिए 3 वर्ष की सजा और जुर्माने का प्रावधान एवं रियल एस्टेट एजेंट और उपभोक्ता के लिए 1 वर्ष की सजा का प्रावधान।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस अधिनियम को 9 जून 2017 की अधिसूचना के साथ लागू किया गया जो 01 मई 2017 रेगुलेटरी अथॉरिटी के रूप मे यथा-अभिहित की स्वीकृति प्रदान की गई।

शेष अगले अंक में...

UP में विकसित भारत संकल्प यात्रा का असर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रण है कि सरकार की सभी प्रमुख योजनाएं जन-जन तक पहुंचनी चाहिए। इस प्रण को पूरा करने लिए देश भर में विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की गई है। यात्रा का उद्देश्य ये सुनिश्चित करना है कि केंद्र की सभी योजनाओं का लाभ लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे।

प्रधानमंत्री ने अपनी सभाओं में ग्रामीण क्षेत्रों में 'मोदी की गारंटी' वाहन को लेकर उपजे उत्साह का उल्लेख कई बार किया है। पीएम मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान 1.5 लाख से अधिक लाभार्थियों से बात कर उनके अनुभव को भी जाना है। जिसमें लाभार्थियों ने पक्का मकान, नल जल कनेक्शन, शौचालय, निःशुल्क इलाज, निःशुल्क राशन, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, बैंक खाता खुलवाने, पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम फसल बीमा योजना, पीएम स्वनिधि योजना और प्रधानमंत्री स्वामित्व संपत्ति कार्ड के तहत मिलने वाले लाभ का उल्लेख किया। नरेंद्र मोदी ने अपनी जनसभाओं में ये भी स्पष्ट किया है कि अब देश भर के गांवों में करोड़ों परिवारों को किसी सरकारी कार्यालय के बार-बार चक्कर लगाए बिना योजनाओं का लाभ मिल रहा है। पीएम मोदी के मुताबिक "इसलिए लोग कहते हैं, मोदी की गारंटी का मतलब काम पूरा होने की गारंटी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा का संदेश सोशल प्लेटफॉर्म पर भी लिखा "विकसित भारत संकल्प यात्रा, ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बनी है, जो अब तक सरकार की योजनाओं से नहीं जुड़ पाए।"

प्रधानमंत्री के काज में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा' के तहत लाभार्थियों के साथ वर्चुअल संवाद करने के बाद योगी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा। "विकसित भारत संकल्प यात्रा अब तक का सबसे बड़ा जन जागरण का अभियान है।" सीएम योगी का दावा है कि साल 2014 से पहले चेहरा देखकर योजनाओं का लाभ दिया जाता था लेकिन 2014 के बाद योजनाओं का लाभ समाज के सबसे निचले पायदान तक पहुंच रही है। जिसमें गरीब, वंचित, दलित, पिछड़ा या समाज के उन सभी लोगों को दिया जाने लगा जो अब तक इससे वंचित थे। मुख्यमंत्री योगी के मुताबिक पहली बार ये देखने को मिला कि सबका साथ और सबका विकास केवल एक नारा नहीं बल्कि एक हकीकत है।

उत्तर प्रदेश के गांव-गांव, नगर-नगर पहुंच रही ''मोदी की गारंटी वैन''

योगी आदित्यनाथ ये सुनिश्चित कर रहे हैं कि 'मोदी की गारंटी वैन' नागरिकों के जीवन में सुरक्षा, समृद्धि और खुशहाली की वाहक बने। इसका नतीजा ये है कि मोदी की गारंटी वैन जहां भी पहुंच रही है, वहां स्थानीय लोग गाजे-बाजे के साथ इसका स्वागत कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने वर्चुअल संवाद में बताया कि हर प्रदेशवासी मोदी जी की गारन्टी वैन पर प्रधानमंत्री जी का संदेश सुन रहे हैं। साथ ही सरकारी योजनाओं से परिचित होकर लाभान्वित हो रहे हैं। सीएम योगी के मुताबिक डबल इंजन सरकार की लोककल्याणकारी योजनाओं से पूरे प्रदेश को 100% खुशहाल करने का प्रयास हो रहा है।

भारत संकल्प यात्रा' में सहभागी 04 लाख से अधिक लोगों को वर्चुअली संबोधित करते हुए सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए 'सबका साथ-सबका विकास' एक नारा भर नहीं है, बल्कि यह एक संकल्प है, एक कार्य संस्कृति है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस विशेष यात्रा में 'मेरी कहानी मेरी जुबानी' थीम पर एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आप लोगों के लिए ही है। मोदी जी की गारंटी वैन के पास एकत्रित लोगों को अपने अनुभव बताएं, यह औरों के लिए प्रेरणास्पद होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार की योजनाओं से जुड़ने का अर्थ है जीवन में खुशहाली लाना। पूर्ववर्ती सरकारों के समय की स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सेक सूची जब बनी थी तब केंद्र व राज्य में भाजपा सरकारें नहीं थीं। योगी ने कहा कि ऐसे में आवास आदि योजनाओं से बड़ी संख्या में लोग वंचित रह गए। मोदी सरकार में नए सिरे से लाभार्थियों का चयन हुआ और परिणामस्वरूप बीते साढ़े 09 वर्षों में देश मे 12 करोड़ लोगों के घरों में शौचालय बने हैं, जिसमें साढ़े 03 करोड़ अकेले उत्तर प्रदेश में हैं। गरीब के घर शौचालय बने यह कोई सोचता नहीं था। किसानों को लागत का डेढ़ गुना एमएसपी देने का सपना मोदी सरकार में पूरा हो रहा है। 12 करोड़ किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि मिल रही है।

जाहिर है विकसित भारत संकल्प यात्रा यूपी में असरदार तरीके से चल रही है। इस यात्रा के सकारात्मक नतीजे भी दिखने लगे हैं। उम्मीद करिए कि पीएम मोदी का राष्ट्र को विकसित देशों की कतार में लाने का अभियान जल्द से जल्द पूरा हो। गौतम बुद्ध जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा का क्या अपडेट है वो जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के साक्षात्कार में पढिए।

NOWNOIDA अपडेट ब्यूरो की रिपोर्ट।

डॉ. प्रियंका सिंह
प्रो. एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा

“भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराध, उनकी रोकथाम और नियंत्रण नीतियां”

महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा दुनिया में सबसे व्यापक मानवाधिकार उल्लंघन बनी हुई है, जो 3 में से 1 से अधिक महिलाओं को प्रभावित करती है - यह आंकड़ा पिछले दशक में काफी हद तक अपरिवर्तित रहा है।वैश्विक आपात स्थितियों, संकटों और संघर्षों ने महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा को और अधिक बढ़ा दिया है और कारकों तथा जोखिम कारकों को बढ़ा दिया है। जलवायु परिवर्तन महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ सभी प्रकार की लिंग-आधारित हिंसा को बढ़ा रहा है, एक पहले से ही दिखाई देने वाला पैटर्न जो निस्संदेह संकट के बढ़ने के साथ और अधिक गंभीर हो जाएगा। तेजी से बढ़ते डिजिटलीकरण से महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ ऑनलाइन हिंसा बढ़ रही है, जिससे हिंसा के मौजूदा रूप बढ़ रहे हैं और नए रूप सामने आ रहे हैं। इसी समय, अधिकार-विरोधी आंदोलनों और नारी-विरोधी समूहों में वृद्धि हुई है, जिससे प्रतिगामी कानूनों और नीतियों का विस्तार हुआ है, महिला अधिकार संगठनों के खिलाफ प्रतिक्रिया हुई है और महिला मानवाधिकार रक्षकों और कार्यकर्ताओं के खिलाफ मामलों में वृद्धि हुई है।

इस संदर्भ में, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करना अकल्पनीय लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। नारीवादी सक्रियता और वकालत के साथ-साथ न्याय, स्वास्थ्य, वित्तीय और अन्य क्षेत्रों में समन्वित कार्रवाई के माध्यम से महिलाओं के खिलाफ हिंसा में बड़े पैमाने पर कमी हासिल की जा सकती है। हाल के साक्ष्य बताते हैं कि मजबूत और स्वायत्त नारीवादी आंदोलन परिवर्तन लाने में सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। महिलाओं के खिलाफ हिंसा खत्म करना हर किसी का काम है. इस 16 दिनों में, दुनिया भर में नारीवादी आंदोलनों और अधिवक्ताओं के साथ अपनी एकजुटता दिखाएं। चाहे आप एक अनुभवी कार्यकर्ता हों या अभी शुरुआत कर रहे हों, यहां दस तरीके दिए गए हैं जिनसे आप महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने के लिए अभी कार्य कर सकते हैं:

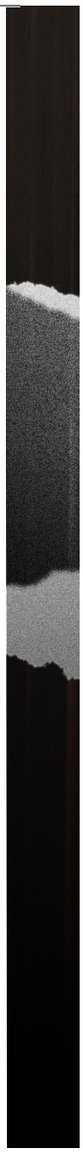

भारत का संविधान न केवल महिलाओं को समानता प्रदान करता है बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय अपनाने का अधिकार भी देता है ताकि उनके सामने आने वाले संचयी सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक नुकसान को दूर किया जा सके। अनुच्छेद 14 पुरुषों और महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। जबकि अनुच्छेद 15 धर्म, नस्ल, जाति, लिंग आदि के आधार पर किसी भी नागरिक के खिलाफ भेदभाव पर रोक लगाता है, अनुच्छेद 15(3) एक विशेष प्रावधान बनाता है जो राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव करने में सक्षम बनाता है। इसी प्रकार, अनुच्छेद 16 सभी नागरिकों के लिए सार्वजनिक नियुक्तियों के मामले में अवसरों की समानता प्रदान करता है। अनुच्छेद 39 (ए) में आगे उल्लेख किया गया है कि राज्य अपनी नीति को सभी नागरिकों, पुरुषों और महिलाओं को समान रूप से, आजीविका के साधन का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करेगा, जबकि अनुच्छेद 39 (सी) समान काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करता है। अनुच्छेद 42 राज्य को काम और मातृत्व राहत की उचित और मानवीय स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए प्रावधान करने का निर्देश देता है। सबसे बढ़कर, संविधान अनुच्छेद 51 (ए) (ई) के माध्यम से महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं को त्यागने के लिए प्रत्येक नागरिक पर एक मौलिक कर्तव्य लगाता है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए सरकार के प्रयास

एक ओर, सरकार जहां भी आवश्यक हो, समीक्षा और संशोधन के माध्यम से मौजूदा कानूनों को मजबूत कर रही है, और राष्ट्रीय और राज्य महिला आयोग, सभी महिला पुलिस स्टेशन इत्यादि जैसे नए संस्थागत तंत्र विकसित कर रही है, दूसरी ओर, यह परियोजनाएं चला रही है जो कमजोर महिलाओं को अल्पावास गृह, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास आदि जैसी सहायता प्रदान करता है और स्वाधार जैसी योजनाओं के माध्यम से हिंसा पीड़ितों का पुनर्वास करता है। राष्ट्रीय महिला आयोग और कई गैर सरकारी संगठन भी लैंगिक मुद्दों पर न्यायिक और पुलिस अधिकारियों के लिए संवेदीकरण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं।

विधायी उपाय - महिलाओं के कानूनी अधिकार

संवैधानिक जनादेश को बनाए रखने के लिए, राज्य ने समान अधिकार सुनिश्चित करने, सामाजिक भेदभाव और विभिन्न प्रकार की हिंसा और अत्याचारों का मुकाबला करने और विशेष रूप से कामकाजी महिलाओं को सहायता सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न विधायी उपाय लागू किए हैं।

हालाँकि महिलाएँ 'हत्या', 'डकैती', 'धोखाधड़ी' आदि जैसे किसी भी अपराध की शिकार हो सकती हैं, लेकिन जो अपराध विशेष रूप से महिलाओं के खिलाफ निर्देशित होते हैं उन्हें 'महिलाओं के खिलाफ अपराध' के रूप में जाना जाता है। इन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के तहत पहचाने गए अपराध

- बलात्कार (धारा 376 आईपीसी)
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए अपहरण और अपहरण (धारा 363 - 373 आईपीसी)
- दहेज के लिए हत्या, दहेज हत्या या उनके प्रयास (आईपीसी की धारा 302/304-बी)
- मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से अत्याचार (आईपीसी की धारा 498-ए)
- छेड़छाड़ (आईपीसी की धारा 354)
- यौन उत्पीड़न (आईपीसी की धारा 509) (अतीत में छेड़छाड़ के रूप में संदर्भित)
- लड़कियों का आयात (21 वर्ष तक की आयु) (आईपीसी की धारा 366-बी)
- विशेष कानूनों के तहत पहचाने गए अपराध, जैसे:
- सती आयोग (रोकथाम) अधिनियम, 1987
- दहेज निषेध अधिनियम, 1961
- महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व (निषेध) अधिनियम, 1986
- अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम, 1956
- घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005

प्रवर्तन

कानून और व्यवस्था और अन्य आपराधिक मामले संविधान के तहत राज्य के विषय हैं और इसलिए, संबंधित अधिनियमों के प्रवर्तन से निपटने की सीधी जिम्मेदारी राज्य सरकार और उनके तहत तंत्र की है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों का पंजीकरण, जांच, पता लगाना और रोकथाम मुख्य रूप से राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों की जिम्मेदारी है। हालाँकि, भारत सरकार ने ऐसे अपराधों को रोकने के लिए कई उपाय शुरू किए हैं, जैसे:-

- स्वाधार योजना के तहत संकटग्रस्त महिलाओं के लिए हेल्पलाइन की स्थापना।
- अल्पावास गृह और स्वाधार जैसी योजनाओं के माध्यम से हिंसा के पीड़ितों को सहायता सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, जिसके तहत आश्रय, रखरखाव, परामर्श, क्षमता निर्माण, व्यावसायिक प्रशिक्षण, चिकित्सा सहायता और अन्य सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।
- अनुदान सहायता योजनाएं तस्करी के पीड़ितों के बचाव और पुनर्वास के साथ-साथ तस्करी के स्रोत क्षेत्रों में विशेष योजनाओं के माध्यम से रोकथाम के लिए सहायता प्रदान करती हैं।
- राष्ट्रीय और राज्य महिला आयोगों के हस्तक्षेप के माध्यम से शिकायतों का निवारण।

कानूनी साक्षरता एवं कानूनी जागरूकता शिविरों का आयोजन।

(i) जागरूकता सृजन और वकालत और (ii) राष्ट्रीय महिला कोष, स्व शक्ति परियोजना, स्वयंसिद्धा परियोजना, स्वावलंबन कार्यक्रम (राज्य क्षेत्र में स्थानांतरित होने के बाद से) और प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम के कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए योजना का कार्यान्वयन। (कदम)।

महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण प्रावधानों को हटाने और महिलाओं के खिलाफ अपराधों के लिए दंड बढ़ाने की दृष्टि से कानूनों की समीक्षा।

लैंगिक मुद्दों पर न्यायपालिका, पुलिस और नागरिक प्रशासन को संवेदनशील बनाना।

एनसीडब्ल्यू सहित विभिन्न स्रोतों से प्राप्त महिलाओं के खिलाफ अत्याचार के मामलों की रिपोर्ट पर केंद्र और राज्य सरकारों के संबंधित अधिकारियों के साथ अनुवर्ती कार्रवाई करना।

प्रासंगिक अधिनियमों में विधायी परिवर्तनों के अलावा, महिलाओं के खिलाफ अपराधों से संबंधित कानून को प्रभावी ढंग से लागू करने और प्रवर्तन की निगरानी करने और आपराधिक न्याय प्रणाली के प्रशासन में सुधार पर अधिक ध्यान देने के

लिए राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेश प्रशासनों को निर्देश/दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। और ऐसे उपाय करना जो महिलाओं और समाज के अन्य कमजोर वर्गों के खिलाफ अपराध की रोकथाम के लिए आवश्यक हों। सुझाए गए उपायों में शामिल हैं:

- महिलाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालने वाले पुलिस अधिकारियों को संवेदनशील बनाना।
- दहेज हिंसा से संबंधित मौजूदा कानून को सख्ती से लागू करें।
- पुलिस स्टेशनों और विशिष्ट महिला पुलिस स्टेशनों में महिला पुलिस कक्ष स्थापित करें।
- हिंसा के पीड़ितों को संस्थागत सहायता प्रदान करना।
- बलात्कार की पीड़ितों को परामर्श प्रदान करना।
- महिलाओं की तस्करी को खत्म करने के उपाय करें। राज्यों को तस्करी के मामलों पर सलाह देने के लिए राज्य सलाहकार समितियों का गठन करने की भी सलाह दी गई है।
- महिला पुलिस अधिकारियों की व्यापक भर्ती सुनिश्चित करें।
- महिलाओं के खिलाफ अत्याचार से निपटने के लिए विशेष कानूनों में पुलिस कर्मियों को प्रशिक्षित करें
- फास्ट ट्रैक कोर्ट की स्थापना.
- पारिवारिक न्यायालयों की स्थापना.
- दहेज निषेध अधिकारियों की नियुक्ति और दहेज निषेध अधिनियम, 1961 के तहत नियमों की अधिसूचना।

राष्ट्रीय महिला आयोग

सरकार ने महिलाओं को प्रदान किए गए संवैधानिक और कानूनी सुरक्षा उपायों से संबंधित सभी मामलों का अध्ययन और निगरानी करने के लिए एक विशिष्ट जनादेश के साथ राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) नामक एक संवैधानिक निकाय की स्थापना की है; जहां भी आवश्यक हो, संशोधन का सुझाव देने के लिए मौजूदा कानूनों की समीक्षा करें; और महिलाओं के अधिकारों से वंचित होने वाली शिकायतों पर गौर करना। एनसीडब्ल्यू को दहेज/अत्याचार के मामलों, दहेज से संबंधित आत्महत्या/मृत्यु/हत्या से संबंधित शिकायतें प्राप्त हो रही हैं। इन मामलों को एनसीडब्ल्यू अधिनियम, 1990 की धारा 10 (1) (एफ) और 10 (1) (जी) के तहत आयोग में विधिवत संसाधित किया जाता है और आयोग की सिफारिशों के साथ पुलिस, जिला मजिस्ट्रेट आदि जैसे उपयुक्त अधिकारियों को भेजा जाता है। आपराधिक कानूनों के तहत कार्रवाई में तेजी लाना और दोषी व्यक्तियों को अदालत में मुकदमा चलाना। इन मामलों की सुनवाई दहेज निषेध अधिनियम, 1961 के साथ पढ़ी जाने वाली भारतीय दंड संहिता की धारा 304-बी, 498 ए, 302 आदि के तहत आपराधिक क्षेत्राधिकार वाले न्यायालयों में की जाती है। लगभग सभी राज्य सरकारों ने अपने यहां महिलाओं के लिए राज्य आयोग भी स्थापित किए हैं।

विशाखा दिशा निर्देश यौन उत्पीड़न के मामलों में भारत में उपयोग के लिए प्रक्रियात्मक दिशानिर्देशों का एक सेट था। इन्हें 1997 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रख्यापित किया गया था और 2013 में कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम द्वारा हटा दिया गया था।

यह कानून की पढ़ाई करने का मामला नहीं है, बल्कि हमारी बेटियों को जीवन रक्षा नियंत्रण और इस प्रकार के जघन्य अपराध के खिलाफ निवारक कार्रवाई के लिए सभी बुनियादी चीजें और आवश्यक जानकारी सिखाकर बड़ा करने का मामला है। इसके लिए सबसे पहले हमें खुद को सीखना होगा।

परवरिश

डॉ. ज्योति सिंह,
एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा

परवरिश, एक ऐसा व्यवहार है जिसको माता पिता अपने बच्चे पर अपनाते हैं। इस व्यवहार के द्वारा बच्चे के सभी पहलुओं का ध्यान रखा जाता है। यह एक ऐसी क्रिया है जो बालक में बचपन से लेकर प्रौढ़ावस्था तक चलती है। इसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, तथा सामाजिक सभी पहलू शामिल होते हैं।

जब पालन-पोषण की बात आती है, तो परिवारों के बीच काफी विविधता होती है। पारिवारिक इकाई कैसे अस्तित्व में है और बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया जाता है, इस पर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

संस्कृति की परिभाषा व्यक्तियों द्वारा साझा किए गए सामाजिक मानदंडों, मूल्यों, भाषा और व्यवहार के एक प्रतिरूप को संदर्भित करती है। परिणामस्वरूप, माता-पिता उनकी संस्कृति से प्रभावित होते हैं। जब स्व-नियमन की बात आती है, तो ध्यान, अनुपालन, विलंबित संतुष्टि, कार्यकारी कार्य और प्रयास पूर्ण नियंत्रण को बढ़ावा देने के संबंध में विभिन्न संस्कृतियों में पालन-पोषण के दृष्टिकोण अलग-अलग होते हैं।

प्रत्येक माता-पिता का अपने बच्चों से बातचीत करने और उनका मार्गदर्शन करने का एक अलग दृष्टिकोण होता है। एक बच्चे के नैतिकता, सिद्धांत और आचरण आम तौर पर इस बंधन के माध्यम से स्थापित होते हैं। विभिन्न शोधकर्ताओं ने पालन-पोषण शैलियों को विभिन्न मनोवैज्ञानिक संरचनाओं में समूहीकृत किया है। इस लेख की सामग्री केवल चार पेरेंटिंग श्रेणियों पर केंद्रित होगी: अधिनायकवादी, आधिकारिक, अनुज्ञावादी, और असंबद्ध। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे करें, इसके लिए प्रत्येक श्रेणी एक अद्वितीय दृष्टिकोण अपनाती है। आम तौर पर, प्रत्येक माता-पिता इन श्रेणियों में से एक में आते हैं और कभी-कभी उनमें किसी अन्य श्रेणी की कुछ विशेषताएं होती हैं। पालन-पोषण की शैली स्थिति पर भी निर्भर हो सकती है।

सत्तावादी

इस शैली को अक्सर तानाशाही और दबंग के रूप में वर्णित किया जाता है। ये माता-पिता किसी भी प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं, "क्योंकि मैंने ऐसा कहा था!" और बिना कोई कारण बताए आज्ञापालन की अपेक्षा करते हैं। नियम सख्त हैं, जिनमें व्याख्या, समझौता या चर्चा के लिए कोई जगह नहीं है। नियमों का उल्लंघन करने पर दंड कठोर हैं। इस प्रकार के घर में, बच्चों को शायद ही कभी अपने जीवन में कुछ कहने का मौका दिया जाता है और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे बिना किसी सवाल के उन्हें जो भी करने के लिए कहा जाए, उसका पालन करें। आज्ञाकारिता सुनिश्चित करने के लिए अक्सर दंडों का उपयोग किया जाता है, और यदि स्नेह दिया भी जाता है तो बहुत कम दिया जाता है। इस दृष्टिकोण के बच्चे पर हानिकारक परिणाम हो सकते हैं जो वयस्कता में भी उनका अनुसरण कर सकते हैं। चिकित्सक और लेखक एलिसन शेफ़र के अनुसार, उन परिणामों में शामिल हैं:

- एक "अनुयायी" मानसिकता विकसित करना जहां इन बच्चों को अपने लिए चीजें तय करने में परेशानी होती है
- स्वयं सही और गलत को पहचानने में कठिनाई
- कम आत्मसम्मान और बाहरी प्राधिकारियों से अपने मूल्य की पुष्टि की मांग करना

उपरोक्त के अलावा, अधिनायकवादी पालन-पोषण स्थायी सबक प्रदान नहीं करता है; जैसे ही माता-पिता चले जाते हैं, बच्चा अक्सर हरकतें करेगा। वे अक्सर अपने माता-पिता के अलावा किसी और से मार्गदर्शन भी मांगेंगे।

आधिकारिक

इसे आम तौर पर सबसे अच्छी पेरेंटिंग शैली माना जाता है क्योंकि यह संरचना और स्वतंत्रता के बीच संतुलन प्रदान करती है, जिससे बच्चे को उचित सीमाओं के भीतर बढ़ने और अपनी क्षमताओं का पता लगाने की अनुमति मिलती है। इस शैली का उपयोग करने वाले माता-पिता सख्त मानक स्थापित करेंगे, जिसका वे अपने बच्चों से पालन करने की अपेक्षा करते हैं, लेकिन साथ ही उन्हें भावनात्मक रूप से देखभाल करने वाला वातावरण प्रदान करके समर्थन भी देते हैं जो विश्वास को बढ़ावा देता है। इस शैली को "कठिन लेकिन निष्पक्ष" या "दृढ़ लेकिन पोषणकारी" के रूप में वर्णित किया जा सकता है। मार्गदर्शन प्रदान करने वाली संरचना के भीतर एक बच्चे के पास गलतियाँ करने की गुंजाइश होती है और बिना निर्णय लिए उन्हें गलतियाँ करने की स्वतंत्रता होती है। बॉमरिंड ने आधिकारिक माता-पिता का वर्णन इस प्रकार किया:

वे मुखर हैं, लेकिन दखल देने वाले और प्रतिबंधात्मक नहीं हैं। उनके अनुशासनात्मक तरीके दंडात्मक के बजाय सहायक हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे मुखर होने के साथ-साथ सामाजिक रूप से जिम्मेदार और स्व-विनियमित होने के साथ-साथ सहयोगी भी बनें।

यह शैली बच्चों की मदद कर सकती है:

- आत्म-आश्वासन प्राप्त करें
- जिम्मेदारी संभालें
- कठिनाइयों पर काबू पाने का तरीका जानें
- अपने स्वयं के निर्णय में आश्वस्त बनें

मार्गदर्शन प्रदान करने वाली संरचना के भीतर एक बच्चे के पास गलतियाँ करने की गुंजाइश होती है और बिना निर्णय लिए उन्हें गलतियाँ करने की स्वतंत्रता होती है

अनुमोदक

अधिनायकवादी पालन-पोषण शैली के बिल्कुल विपरीत, अनुदार माता-पिता अपने बच्चों को वही करने देते हैं जो वे चाहते हैं और ऐसे नियम या संरचना लागू नहीं करते हैं जो बच्चे को निराश या परेशान कर सकते हैं। इस शैली के विवरण में अक्सर माता-पिता अपने बच्चे के साथ एक सहकर्मी या मित्र के रूप में व्यवहार करने की कोशिश करते हैं, और उनकी इच्छाओं को लगभग तुरंत पूरा कर देते हैं। यह उस माता-पिता का परिणाम हो सकता है जो अपने घर में एक सत्तावादी पालन-पोषण शैली के साथ बड़े हो रहे हैं और अपने बच्चे को इसमें नहीं डालना चाहते हैं। अपने बच्चे की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी होना बहुत अच्छी बात है, लेकिन संरचना और सीमाओं की कमी का दीर्घकालिक प्रभाव नकारात्मक हो सकता है। शेफ़र ने कहा, "आप या तो एक ऐसे बच्चे के साथ समाप्त होते हैं जो हकदार है या अविश्वसनीय रूप से चिंतित है क्योंकि जहाज चलाने वाला कोई नहीं है।"

अत्यधिक अनुज्ञा पूर्ण पालन-पोषण के अन्य नकारात्मक परिणामों में शामिल हो सकते हैं:

- खराब भावनात्मक नियंत्रण विकसित करना
- जब बच्चा अपने रास्ते पर न चले तो अत्यधिक विद्रोही और उद्दंड होना
- चुनौतियों का सामना करने पर हार मान लेना
- नशीली दवाओं और शराब के दुरुपयोग जैसे हानिकारक असामाजिक व्यवहार में संलग्न होना

लापरवाह माता-पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा बातचीत या बातचीत नहीं करते हैं, अपने बच्चों की गतिविधियों या कार्यक्रमों में शामिल नहीं होते हैं और किसी भी प्रकार के भावनात्मक जुड़ाव के लिए प्रयास नहीं करते हैं।

बेपरवाह

जो माता-पिता लापरवाही बरतते हैं, जैसा कि श्रेणी से पता चलता है, वे अपने बच्चों के साथ बिल्कुल भी बातचीत नहीं करते हैं। बच्चों को कोई नियम, संरचना या स्नेह नहीं दिया जाता है और उन्हें बड़े पैमाने पर अपनी सुरक्षा के लिए छोड़ दिया जाता है। पालन-पोषण की यह शैली, खासकर जब इसे चरम सीमा पर ले जाया जाए, तो बच्चों को खतरे में डाल सकती है और उन्हें घर से निकाला जा सकता है। इस शैली को "अनइंवॉल्व्ड पेरेंटिंग" भी कहा जा सकता है।

लापरवाह माता-पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा बातचीत या बातचीत नहीं करते हैं, अपने बच्चों की गतिविधियों या कार्यक्रमों में शामिल नहीं होते हैं और किसी भी प्रकार के भावनात्मक जुड़ाव के लिए प्रयास नहीं करते हैं। भले ही शारीरिक रूप से हानिकारक न हो, इस पालन-पोषण शैली का मनोवैज्ञानिक परिणाम गंभीर है और इससे बच्चे पैदा हो सकते हैं:

- उदास रहना
- करीबी रिश्ते बनाने के लिए संघर्ष करना।
- असफल रिश्तों का होना
- अपराधी या शत्रुतापूर्ण व्यवहार के लिए फटकार लगाना
- खुद को दूसरों से अलग करना

“उपेक्षित माता-पिता . . . ऐसे बच्चों का पालन-पोषण करें जिनमें लगाव संबंधी कठिनाइयाँ हों क्योंकि बच्चे और माता-पिता के बीच का बंधन बहुत क्षणभंगुर होता है," फ्रान वालफिश, एक बच्चे, पालन-पोषण और संबंध मनोचिकित्सक ने कहा।

निष्कर्ष

शोध से पता चलता है कि आधिकारिक माता-पिता स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से सक्षम बच्चों का पालन-पोषण करने की अधिक संभावना रखते हैं।

जबकि आधिकारिक माता-पिता के बच्चे मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों, रिश्ते की कठिनाइयों, मादक द्रव्यों के सेवन, खराब आत्म-नियमन या कम आत्मसम्मान से प्रतिरक्षित नहीं हैं, ये लक्षण आमतौर पर उन माता-पिता के बच्चों में अधिक देखे जाते हैं जो सख्ती से सत्तावादी, अनुदार या गैर-शामिल पालन-पोषण शैलियों को अपनाते हैं।

अग्नाशय कैंसर के लक्षण और उपाय

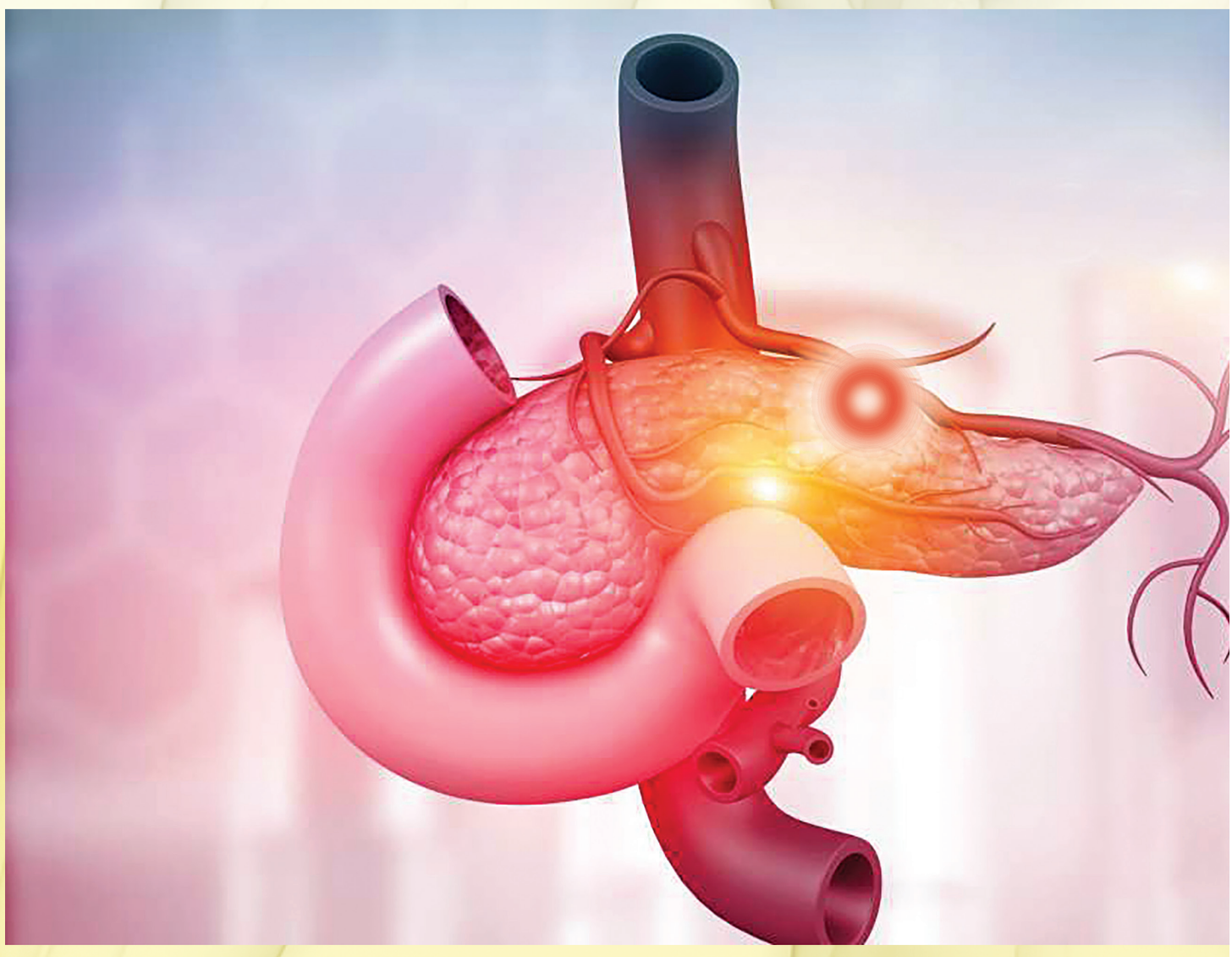

डॉक्टर शेफाली तयाल,
हेल्थ एंड स्किन केयर

अग्न्याशय का कैंसर सभी कैंसरों का लगभग 3% है। अग्नाशय का कैंसर महिलाओं में आठवां सबसे आम कैंसर है और पुरुषों में दसवां सबसे आम कैंसर है। दुर्भाग्य से, अग्नाशय कैंसर को रोकने का कोई निश्चित तरीका नहीं है। हालाँकि, धूम्रपान और मद्यपान से दूर रहने, स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने और नियमित जांच से बीमारी से जुड़े जोखिम कारकों को कम किया जा सकता है। मैंने देखा है कि मरीज लंबे समय से मधुमेह के इतिहास के साथ मेरे पास आते हैं और उसी के लिए दवाएं लेते हैं और बाद में जीवन में उन्हें अग्नाशय कैंसर हो गया। हालांकि इस पर अभी तक कोई उचित शोध नहीं आया है लेकिन क्लीनिकल डेटा कहीं न कहीं दोनों के बीच संबंध का संकेत देता है।

अग्नाशय कैंसर मानव शरीर में पेट के पीछे पाई जाने वाली अग्नाशय ग्रंथि का कैंसर है और पेट के ऊपरी बाएं हिस्से तक फैला होता है। ये एक खतरनाक बीमारी है जिसमें 5 साल तक जीवित रहने की दर 12% है। ये महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक आम है, और शुरुआती चरणों में इसका निदान करना भी मुश्किल है। अग्न्याशय एक एक्सोक्राइन (पाचन भूमिका) और एक अंतःस्रावी ग्रंथि (हार्मोनल भूमिका) दोनों के रूप में विभिन्न कार्य करता है। मैं आपको अग्न्याशय के अंतःस्रावी घटक के बारे में थोड़ा बताना चाहूंगा जिसमें आइलेट ऑफ लैंगरहैंस शामिल हैं जो महत्वपूर्ण हार्मोन बनाते हैं और जारी करते हैं जैसे इंसुलिन और ग्लूकोज, सीधे रक्त प्रवाह में, जो शरीर में रक्त शर्करा के स्तर को बनाए रखने में मदद करते हैं।

अग्न्याशय के कैंसर का सबसे आम रूप अग्नाशयी एडेनोकार्सिनोमा है, जो अग्नाशय वाहिनी की कोशिकाओं से उत्पन्न होने वाला एक एक्सोक्राइन ट्यूमर है। अंतःस्रावी ट्यूमर बहुत कम आम हैं और सभी अग्न्याशय कैंसर के लगभग 5% के लिए जिम्मेदार हैं। एंडोक्राइन ट्यूमर को आमतौर पर न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर (एनईटी) कहा जाता है।

मैंने अग्नाशय के कैंसर से पीड़ित कई मामलों का इलाज किया है, जहां रोगी को प्रारंभिक और अग्रिम चरणों में निदान किया गया था, लेकिन उचित दवा, आहार प्रबंधन के साथ उन्हें न केवल जीवन की बेहतर गुणवत्ता मिली, बल्कि बेहतर जीवन रक्षा भी मिली।

शुरुआत में, अग्नाशय कैंसर कोई गंभीर संकेत या लक्षण पैदा नहीं कर सकता है। प्रारंभिक लक्षणों में अधिजठर क्षेत्र में दर्द, उल्टी, मिट्टी के रंग का मल, गहरे रंग का मूत्र, पीलिया, वजन कम होना, कमजोरी आदि शामिल हैं। अग्नाशय के कैंसर का निदान विभिन्न इमेजिंग परीक्षणों और ट्यूमर मार्करों जैसे एमआरआई, सीटी स्कैन, पीईटी स्कैन, एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड, ट्यूमर मार्कर टेस्ट (सीए 19.9) के जरिए किया जा सकता है।

मैंने कई रोगियों को बार-बार स्कैन कराने के बजाय CA.19.9 की निगरानी करने की सलाह दी। यदि आवश्यक न हो तो PET CT स्कैन साल में अधिकतम एक या दो बार ही किया जाना चाहिए। अग्नाशय कैंसर के 5 चरण होते हैं, जो ट्यूमर के आकार और विस्तार पर निर्भर करते हैं। चरण 0 में, अग्न्याशय की परत में असामान्य कोशिकाएं पाई जाती हैं। ये असामान्य कोशिकाएं कैंसर बन सकती हैं और आस-पास के सामान्य ऊतकों में फैल सकती हैं। स्टेज 0 को कार्सिनोमा इन सीटू भी कहा जाता है। स्टेज I में, कैंसर बन चुका होता है और केवल अग्नाशय में पाया जाता है, और 4 सेमी से बड़ा नहीं होता है। चरण II अग्नाशय कैंसर में, ट्यूमर आमतौर पर 4 सेमी से बड़ा होता है और इसमें 1-3 लिम्फ नोड्स शामिल हो सकते हैं। चरण III में, ट्यूमर किसी भी आकार का होता है और कैंसर 4 से अधिक लिम्फ नोड्स या आस-पास की रक्त वाहिकाओं में फैल गया है। चरण IV में, कैंसर शरीर के अन्य भागों में मेटास्टेसिस कर चुका होता है।

अग्नाशय कैंसर सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है, जिससे दुनिया भर में सालाना दस लाख में से एक-चौथाई मौतें होती हैं। दरअसल, यह दुनिया में 13वां और भारत में 11वां सबसे आम कैंसर है। इसलिए ऊपर बताए गए जोखिम कारकों पर काम करना और स्वस्थ जीवनशैली बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं हमेशा अपने मरीजों को ठीक होने के बाद भी स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने की सलाह देती हूं। साथ ही सभी को मेरी सामान्य सलाह है कि किसी भी बार-बार होने वाली शिकायत या स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचें क्योंकि लगातार जलन कैंसर का कारण बनती है। भविष्य में किसी भी बड़ी स्वास्थ्य समस्या से बचने के लिए हमेशा समय पर डॉक्टर से परामर्श लें। जैसा कि हम जानते हैं कि रोकथाम इलाज से बेहतर है।

साजिद अली
संवाददाता

न्यू नोएडा और न्यू ग्रेटर नोएडा का मास्टर प्लान क्या कहता है?

न्यू नोएडा यहां बसेगा

दादरी से लेकर खुर्जा के बीच 87 गांवों की जमीन पर दादरी-नोएडा-गाजियाबाद इन्वेस्टमेंट रीजन (डीएनजीआईआर) बसाया जाना है। इसे न्यू नोएडा का नाम दिया गया है। यह दिल्ली-मुंबई और अमृतसर-कोलकाता रेलवे फ्रेट कॉरिडोर का हिस्सा है। न्यू नोएडा में ही यह दोनों रेल कॉरिडोर आपस में जुड़ेंगे। इस इन्वेस्टमेंट रीजन को बसाने की जिम्मेदारी शासन ने नोएडा अथॉरिटी को दी है। अथॉरिटी ने यहां का मास्टर प्लान तैयार करने के लिए स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर दिल्ली का चयन किया है। स्कूल मास्टर प्लान-2041 का ड्राफ्ट तैयार कर रहा है। यह शहर पूरी तरह औद्योगिक गतिविधियों का केंद्र होगा। न्यू नोएडा गौतमबुद्ध नगर की दादरी तहसील के 27 और बुलंदशहर जिले की सिकंदराबाद तहसील के 60 गांवों की जमीन पर बसाया जाएगा।

न्यू ग्रेटर नोएडा इस इलाके में बसेगा

ये ग्रेटर नोएडा के फेज-2 की प्लानिंग है। ग्रेटर नोएडा अथॉरिटी इसकी प्लानिंग कर रही है। कंपनी मास्टर प्लान का ड्राफ्ट तैयार कर रही है। इसमें गौतमबुद्ध नगर की दादरी तहसील के साथ हापुड़ जिले की धौलाना और गाजियाबाद जिले की सदर तहसील के करीब 150 गांव शामिल किए जाएंगे। ये एरिया लगभग 28 हजार हेक्टेयर का है। ग्रेटर नोएडा शहर और इस इलाके के बीच दिल्ली-हावड़ा रेल लाइन और नेशनल हाईवे-91 हैं। इन्हें पार करने के लिए ओवरब्रिज और अंडरपास नहीं थे। अब ये परेशानी खत्म हो चुकी है।

न्यू नोएडा का मास्टर प्लान

नोएडा अथॉरिटी ने इस साल न्यू नोएडा में भूमि अधिग्रहण और आंतरिक

ग्रेटर नोएडा शहर और इस इलाके के बीच दिल्ली-हावड़ा रेल लाइन और नेशनल हाईवे-91 हैं। इन्हें पार करने के लिए ओवरब्रिज और अंडरपास नहीं थे। अब ये परेशानी खत्म हो चुकी है

विकास के लिए 1000 करोड़ रुपये आवंटित किये हैं। इस नए शहर में लगभग 6 लाख लोगों के बसने की उम्मीद है। न्यू नोएडा में लॉजिस्टिक हब, नॉलेज सेंटर्स, इंटीग्रेटेड टाउनशिप और स्किल डेवलपमेंट सेंटर्स होने की उम्मीद है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, न्यू नोएडा में इंडस्ट्रीज, ऑफिसेज, यूनिवर्सिटीज और आवासीय उद्देश्यों के लिए डेडिकेटेड एरियाज होंगे।

न्यू नोएडा की जरूरत

दिल्ली-एनसीआर में धीरे-धीरे आबादी बढ़ रही है। बढ़ती आबादी के कारण उद्योगों, वाणिज्यिक परियोजनाओं और शहरी विकास की मांग भी बढ़ती है। नोएडा के आगे के विस्तार के लिए जमीन काफी लिमिटेड है। ऐसे में नई जमीन का अधिग्रहण कर नया शहर बसाने की जरूरत है। इसलिए नोएडा अथॉरिटी ने गौतम बुद्ध नगर और बुलंदशहर जिलों के 86 गांवों में 21,000 हेक्टेयर कृषि भूमि की पहचान की है और इस नए शहर को बसाने की योजना बनाई जा रही है।

ऐसे होगा विकास

न्यू नोएडा का विकास पांच चरणों में किया जाएगा. इसमें सभी की सहभागिता होगी. सरकारी एजेंसियां, प्राइवेट एजेंसियां और किसानों की सहमति के आधार पर जमीनों का अधिग्रहण किया जाएगा और फिर विकास कार्य होगा. 20911 हेक्टेयर में न्यू नोएडा का विकास कार्य होगा. इसमें अलग-अलग माध्यम से जमीनों का अधिकार किया जाएगा (इसे हाईलाइट रखेंगे मैगजीन में)

जमीन अधिग्रहण

पहले मध्यम किसानों से सीधे जमीन खरीदी जाएगी. भू अधिग्रहण नीति 2011 के तहत जमीन मालिकों को उचित मुआवजा दिया जाएगा और उनसे जमीनों का अधिग्रहण किया जाएगा। लैंड पूलिंग के माध्यम से भी इसमें जमीन ली जाएगी. लैंड पूलिंग पॉलिसी के तहत किसानों से उनकी जमीन मांगी जाएगी. किसानों को इसके लिए आवेदन करना होगा, इसमें कम से कम 25 एकड़ का प्लॉट चाहिए. इसके साथ-साथ निजी एजेंसियों को भी भूमि अधिग्रहण करने का मौका मिलेगा. सरकार की भू अधिग्रहण पॉलिसी 2022 के तहत जमीन की खरीद के लिए निजी एजेंसी को भी मौका दिया जाएगा, हालांकि यह जमीनें वहां के औद्योगिक विकास प्राधिकरण, आवास विकास प्राधिकरण, शहरी निकाय की सीमा से बाहर होनी चाहिए। 25 प्रतिशत जमीन की खरीद पर लाइसेंस प्रदान किया जाएगा. यहां डेवलपर की ओर से 18 माह के भीतर विकास किया जा सकेगा. हालांकि इससे इसके लिए पहले से डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट देनी होगी. लाइसेंस मिलने के बाद 2 साल में तय लक्ष्य का 60 प्रतिशत जमीन अधिग्रहण करना जरूरी होगा. 75 प्रतिशत जमीनों का अधिग्रहण करने के बाद नक्शा पास कराना जरूरी होगा. इसका नक्शा यूपीसीडा करेगा. अगर 80 प्रतिशत जमीन के अधिकरण के बाद किसी प्रकार की दिक्कत आती है तो इसमें यूपीसीडा डेवलपर की मदद करेगा। न्यू नोएडा का मास्टर प्लान दिल्ली स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर तैयार कर रहा है। साथ ही न्यू ग्रेटर नोएडा के लिए 28 हजार हेक्टेयर जमीन पर मास्टर प्लान फाइनल करवाया जा चुका है। ये ग्रेटर नोएडा शहर के मास्टर प्लान 2041 का हिस्सा है।

महामृत्युंजय मंत्र : कथा, उत्पत्ति और जाप के नियम

विंध्यवासिनी राय
एस्ट्रोलॉजर और वास्तु एक्सपर्ट

ऋग्वेद में है महामृत्युंजय मंत्र का वर्णन

शिव के बारे में कहा जाता है कि वो मृत्युंजय हैं यानी मृत्यु पर विजय पाई है और ये उनसे जुड़ा एक शक्तिशाली मंत्र है महामृत्युंजय मंत्र। ये मंत्र सृष्टि का बहुत ही शक्तिशाली मंत्र है। महामृत्युंजय मंत्र हिंदू पौराणिक कथाओं में सबसे महत्वपूर्ण मंत्र में से एक है। यह मंत्र ऋग्वेद के मंडल 7, हिम 59 में पाया जाता है। यह मंत्र ऋषि वशिष्ठ को समर्पित है जो उर्वसी और मित्रवरुण के पुत्र थे।

महामृत्युंजय जाप की उत्पत्ति -

ऐसा कहा जाता है कि एक बार ऋषि मृकण्डु और उनकी पत्नी मरुद्मति ने पुत्र की प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या की। भगवान शिव ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें दो विकल्प दिए. जिसमें अल्पायु बुद्धिमान पुत्र और दीर्घायु मंदबुद्धि पुत्र में से एक का चयन करना था.मृकण्डु ने पहले विकल्प का चयन किया और उन्हें मार्कंडेय नाम के पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका जीवन काल मात्र 16 वर्ष था। जब ऋषि मृकण्ड के पुत्र मार्कण्डेय बड़े हुए तो उनके पिता ने उन्हें शिव मंत्र की दीक्षा दी, और पुत्र को शिव भक्ति में रमने को कहा।साथ ही उन्होंने अपने पुत्र को कम उम्र की बात भी बता दिया। जब बालक मार्कंडेय का जीवनकाल पूरा होने वाला था तब उनके

माता पिता को उनकी बड़ी चिंता हुई लेकिन मार्कंडेय ने शिवलिंग के सामने कठोर तपस्या करना शुरू कर दिया और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने लगे। जब उनका जीवनकाल पूर्ण होने को आया तो यमदूत उन्हें लेने के लिए आये लेकिन उसे ले जाने के बजाय वो भी इस तपस्या में शामिल हो गए। तब भगवान यम ने खुद उसे ले जाने का निर्णय लिया। यम के आने पर मार्कंडेय ने अपनी बाहों को शिवलिंग के चारों ओर लपेटकर भगवान शिव से दया की मांग की। जब यमराज ने उनको शिवलिंग से दूर करने की कोशिश की तो भगवान शिव क्रोधित हो गए और शिवलिंग से प्रकट होकर सजा के तौर पर यम को मार दिया। यम की मृत्यु ने सृष्टि में गंभीर संकट पैदा हो गया। इसलिए भगवान शिव ने यम को इस शर्त पर पुनर्जीवित किया, कि बच्चा हमेशा के लिए जीवित रहेगा। यहीं से इस मंत्र की उत्पति हुई। यही कारण है कि भगवान शिव को कालांतक कहा जाता है। इस मंत्र को केवल ऋषि मार्कंडेय को ज्ञात गुप्त मंत्र माना जाता है।

इस कथा में शिव के महामंत्र मृत्युंजय मंत्र का जो चमत्कार बताया गया है अगर आप भी सच्चे मन और श्रद्धा भाव से इस मंत्र का जाप करें तो इस मंत्र के चमत्कारी प्रभाव का लाभ उठा सकते हैं। कहा जाता है कि महामृत्युंजय मंत्र अकाल मृत्यु के लिखे हुए को भी मिटा देता है। सबसे पहले जानते हैं महामृत्युंजय मंत्र क्या है-

ॐ त्रयंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

मंत्र में 33 अक्षर हैं जो 33 देवताओं के द्योतक हैं। इन तैंतीस देवताओं में 8 वसु, 11 रुद्र और 12 आदित्यठ, 1 प्रजापति और एक षटकार हैं। इन तैंतीस देवताओं की सारी शक्तियां महामृत्युंजय मंत्र में निहीत होती है

महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ

हम अपनी तीसरी आंख पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो दो आँखों के पीछे है। यह हमें आपको महसूस करने की ताकत देती है और इसके द्वारा हम जीवन में खुश, संतुष्ट और शांति महसूस करते हैं। हम जानते हैं कि अमरता प्राप्त करना संभव नहीं है, लेकिन भगवान शिव अपनी शक्तियों से हमारी मृत्यु के समय को कुछ समय के लिए बढ़ा सकते है।

महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग कैसे करें ?

- अच्छे स्वास्थ्य के लिए रोजाना सुबह महादेव का ध्यान करके एकाक्षरी मंत्र 'हौं' का जाप करना चाहिए

- अगर रोगों से परेशान हो तो तीन अक्षर के मृत्युंजय मंत्र 'ऊं जूं सः' मंत्र का जाप करें। रात में सोने से पहले इस मंत्र का 27 बार जाप करें

- दुर्घटना और रोगों में चार अक्षर के मृत्युंजय मंत्र में 'ऊं हौं जूं सः' मंत्र लाभकारी है।

- दस अक्षर के मृत्युंजय मंत्र 'ऊं जूं सः माम पालय पालय' को अमृत मृत्युंजय मंत्र भी कहते हैं। स्वयं के लिए इस मंत्र का जप इसी तरह होगा जबकि किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह जप किया जा रहा हो तो 'माम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेना होगा

- मंत्र जाप से पहले तांबे के पात्र में जल भर लें और फिर उसके सामने इस मंत्र का जाप करें, मंत्र जाप के बाद अभिमंत्रित जल उसे पिलाएं, जिसके लिए आपने जाप किया हो

- मृत संजीवनी महामृत्युंजय - मंत्र 'ऊं हौं जूं सः। ऊं भूर्भवः स्वः। ऊं त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ऊं। सः जूं हौं ऊं।'

ये मंत्र अकाल मृत्यु को टालता है। कोई बीमारी असाध्य हो जाए तो इस मंत्र का 64 हजार या सवा लाख जाप करें या किसी विद्वान से कराना चाहिए।

भगवान शिवशंकर का ये जीवनदायी मंत्र चमत्कारी है। लेकिन इसके जाप में कुछ नियमें का ध्यान रखा जाए तो ये और भी असरदार हो जाता है

महामृत्युंजय मंत्र जाप के नियम-

- इस मंत्र का जाप सुबह और शाम दोनों समय किया जा सकता है

- विशेष कष्ट या संकट के समय में इसका जाप किसी भी समय किया जा सकता है

- मंत्र जाप के पहले शिव शंभू को जल और बेलपत्र अर्पित करें

- मंत्र का जाप शिवलिंग या शिव जी की प्रतिमा के सामने करें

- महामृत्युंजय मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला से करें

रीतू मिश्रा
सलाहकार, स्वास्थ्य और स्किन केयर

स्किनकेयर की क्रांति:
आधुनिक सौंदर्य में आयुर्वेद का प्रभाव

स्वास्थ्य और सौंदर्य प्रबंधन के क्षेत्र में 10 साल से अधिक के अनुभव के साथ, ऋतु मिश्रा ने नेशनल और आंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के साथ मिलकर नए स्तर पर पहुंचने का सफलता प्राप्त की है। उनका संघर्ष वेलनेस और एस्थेटिक्स में नए मानकों की स्थापना में नहीं, बल्कि उन्होंने अपनी नैतिकता और प्रतिबद्धता के साथ उच्चतम स्तर की उपलब्धि तक पहुंचने का एक अद्वितीय पथ तय किया है। वहां उनका योगदान न केवल क्षेत्र को नए दिशाएँ दिखा रहा है, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत भी है जो अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से संग्रहीत किया गया है।

प्रस्तावना:

"यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"- इस संस्कृत कहावत से ही आयुर्वेद का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है - जैसे हमारे शारीरिक स्वास्थ्य का संरचना ब्रह्माण्ड के समान है, वैसे ही हमारी त्वचा का सौंदर्य भी हमारी आत्मा के साथ जुड़ा होता है। सौंदर्य और स्वास्थ्य का यह अद्वितीय संबंध आधुनिक समय में स्किनकेयर उद्यमों में आयुर्वेद की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। इस लेख में, हम जानेंगे कैसे आयुर्वेद ने सौंदर्य के क्षेत्र में एक नई दिशा स्थापित की है और इसका आधुनिक स्किनकेयर में कैसा महत्व है।

आयुर्वेद में सौंदर्य की दृष्टि:

आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति का अद्वितीय भूषण, सौंदर्य को एक व्यक्ति की सम्पूर्ण प्रकृति में स्थित मानता है। सौंदर्य को इस प्रकार देखना है कि त्वचा सिर्फ एक हिस्सा नहीं है, बल्कि यह शरीर, मन, और आत्मा का संगम है। आयुर्वेद में सौंदर्य को एक संतुलित, स्वस्थ, और समृद्ध जीवन का प्रतीक माना जाता है।

आयुर्वेद के सौंदर्य सिद्धांत:

सौंदर्य की देखभाल में आयुर्वेद एक सिद्धांतिक दृष्टिकोण लाता है जो त्वचा को बाह्य और आंतरिक स्वस्थता के संतुलन में रखता है। यहां कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो सौंदर्य को संरचित रूप से देखभाल करने में मदद करते हैं:

1. **आत्मीय और बाह्य सुंदरता का संतुलन:** आयुर्वेद में सौंदर्य का सिद्धांत आत्मा और शरीर के बीच संतुलन को बढ़ावा देता है। सुंदरता का अर्थ सिर्फ बाह्य रूप से ही नहीं, बल्कि आत्मा की स्थिति और स्वास्थ्य से भी है।
2. **प्राकृतिक उपचार:** आयुर्वेद में सौंदर्य की देखभाल का मुख्यंत्र है, जिसमें विभिन्न जड़ी-बूटियों, फलों, और पौधों का सही संघटन त्वचा को स्वस्थ और प्राकृतिक चमकीली बनाए रखने में मदद करता है।
3. **आहार और पौष्टिकता:** आयुरवेद में सौंदर्य का सीधा संबंध आहार और पौष्टिकता से जुड़ा है। सही पौष्टिक आहार त्वचा को निखार और स्वस्थता प्रदान करता है।

4. **आसन और प्राणायाम:** योग, आसन, और प्राणायाम के माध्यम से आत्मा का संतुलन बनाए रखना आयुर्वेद की एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इससे चेहरे पर त्वचा में सुधार होती है और मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।
5. **रसायन चिकित्सा का महत्व:** आयुर्वेद में रसायन चिकित्सा एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो त्वचा को युवा और स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है। रसायन चिकित्सा में विभिन्न औषधीय द्रव्यों का संयोजन किया जाता है जो त्वचा को ताजगी और चमक देते हैं।
6. **पंचकर्म चिकित्सा:** आयुर्वेद में पंचकर्म चिकित्सा का विशेष महत्व है जो शरीर के विभिन्न अंगों की सफाई और तंतु शुद्धि के माध्यम से त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है। यह त्वचा के अंदरीय संरचना को सुधारकर सहजता और चमक प्रदान करता है।
7. **रूप और गुण संबंध:** आयुर्वेद में रूप और गुण का संबंध गहरा है। यहां त्वचा की सुंदरता को सिर्फ बाह्य रूप से नहीं, बल्कि त्वचा के गुणों और स्वास्थ्य के साथ भी जोड़ा जाता है। आयुर्वेद में कहा गया है कि सत्त्व, रज, और तम गुणों का संतुलन बनाए रखने से त्वचा स्वस्थ और सुंदर रहती है।
8. **रात्रि और दिनचर्या:** सौंदर्य की देखभाल में आयुर्वेद रात्रि और दिनचर्या का महत्व देता है। नियमित और स्वस्थ दिनचर्या से रात्रि की अच्छी नींद और स्वस्थ शरीर त्वचा के सौंदर्य को बढ़ावा देती है।
9. **प्राकृतिक अध्यात्मवाद:** आयुर्वेद में सौंदर्य की देखभाल का अंतिम सिद्धांत प्राकृतिक अध्यात्मवाद है। यह व्यक्ति को आत्मा के साथ जोड़कर उसे अंतर्निहित चमक देता है, जो बाह्य सौंदर्य का परिचायक होता है।

इन सिद्धांतों के सही अनुसरण से, आयुर्वेद में सौंदर्य की देखभाल न केवल त्वचा को सुंदर बनाए रखती है, बल्कि व्यक्ति को समृद्ध, स्वस्थ, और आत्मा के साथ मिलकर सौंदर्यपूर्ण जीवन की दिशा में मदद करती है।

आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पाद:

आधुनिक समय में, बाजार में उपलब्ध आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पादों का विशेष प्रचलन है। इनमें विशेष रूप से चयन किए गए औषधीय घटक होते हैं, जो त्वचा के स्वस्थ रहने में मदद करते हैं। इन उत्पादों में नैचुरल हर्ब्स, विटामिन्स, और आंतरदृष्टि से समृद्ध तत्व शामिल होते हैं, जो त्वचा को प्राकृतिक रूप से सुंदर और स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं।

आयुर्वेदिक स्किनकेयर के फायदे:

आयुर्वेदिक स्किनकेयर के उपयोग से त्वचा को कई फायदे होते हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

1. **प्राकृतिक और सुरक्षित:** आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पाद बाजार में उपलब्ध अनेक सामग्रियों के बजाय प्राकृतिक तत्वों से बने होते हैं जो त्वचा के लिए सुरक्षित होते हैं।
2. **शानदार पोषण:** इन उत्पादों में होने वाले प्राकृतिक तत्व त्वचा को

उच्च पोषण प्रदान करते हैं, जिससे यह स्वस्थ और नैचुरल बनी रहती है।

3. **त्वचा की संरचना में सुधार:** आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पादों में मौजूद विशेष घटक त्वचा की संरचना में सुधार करने में मदद कर सकते हैं, जिससे यह युवा और स्वस्थ दिखती है।
4. **मानसिक स्वास्थ्य को समर्थन:** आयुर्वेदिक स्किनकेयर के उपयोग से त्वचा पर उपयुक्त पोषण मिलने से मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार हो सकता है।
5. **प्रदूषण से रक्षा:** आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पाद अपने प्राकृतिक स्वरूप के कारण प्रदूषण की हानि से बचाव कर सकते हैं, जिससे त्वचा पर हानिकारक प्रभाव कम होता है।

आयुर्वेद का आधुनिक स्किनकेयर में महत्व:
आयुर्वेदिक स्किनकेयर में आपूर्ति से लेकर प्रचलित रोजमर्रा की देखभाल तक, यह आत्मा को शांति, स्वस्थता, और सौंदर्य की एक अद्वितीय सांगीतिकी प्रदान करता है। आयुर्वेद में उपयुक्त तत्वों का सही संघटन, योग, और सही आहार से त्वचा को उच्च स्वास्थ्य की सुरक्षा मिलती है, जिससे व्यक्ति न केवल फिजिकल बल्कि मानसिक रूप से भी समृद्ध होता है।

समाप्ति: इस रूप में, हमने देखा कि आयुर्वेद कैसे सौंदर्य और स्वास्थ्य के आपसी संबंध को समझता है और इसे आधुनिक स्किनकेयर की दुनिया में कैसा अपना रहा है। आयुर्वेदिक स्किनकेयर उत्पादों का उपयोग न केवल त्वचा को सुंदर बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि यह व्यक्ति को सम्पूर्ण सौंदर्य के साथ स्वस्थ और संतुलित जीवन की दिशा में मदद करता है।

संपर्क:
ई-मेल: earthenraga@gmail.com
मोबाइल: +91 81979-55115

आगरा से गोवर्धन का हवा में करिए सफर

आगरा से अगर आप भगवान कृष्ण की नगरी मथुरा जाने की सोच रहे हैं, तो ये यात्रा अब हवा के रास्ते से भी की जा सकेगी। आगरा से गोवर्धन जाने के लिए हेलीकॉप्टर सेवा का शुभारंभ किया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस के मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बटेश्वर पहुंचे। यहां उन्होंने 100 करोड़ रुपये की योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इसमें हेलीपोर्ट सेवा भी शामिल है। योगी आदित्यनाथ ने बटन दबाकर इन योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया।

पर्यटन के क्षेत्र में प्रदेश की बड़ी उपलब्धि"

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बटेश्वर से अटल बिहारी वाजपेयी का निरंतर संवाद बना रहा है। पक्ष-विपक्ष, छोटे-बड़े को लेकर चलने का काम शुरू किया। सीएम योगी ने कहा कि डबल इंजन सरकार से उत्तर प्रदेश में विकास हुआ है। यूपी आज देश में दूसरे स्थान पर है। आज प्रदेश में सुशासन है। प्रदेश में विकास, गांव की कनेक्टिविटी के साथ हवाई सेवा शुरू हो रही हैं। उन्होंने पर्यटन के क्षेत्र में प्रदेश की उपलब्धि को भी याद किया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि साल 2017 में देश के पर्यटन में तीसरे स्थान पर था, आज कोई आसपास नहीं है।

"पर्यटकों के साथ करें अच्छा व्यवहार"

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पर्यटकों के साथ अच्छा व्यवहार करें। अटल जी की जयंती का जो कार्यक्रम है, वो उनकी जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारंभ है। ग्राम पंचायत स्तर से जिले के स्तर और राज्य स्तर पर काम होंगे। अटलजी ने देश को जो दिया वह विश्व स्तर का था। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में योजनाओं का लाभ लोगों को मिल रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा इसमें सहायक बनेगा। 18 अटल विद्यालय बन रहे हैं, जिसमें गरीबों और मजदूरों के बच्चे पढ़ रहे हैं।

यहाँ बनाया गया हेलीपैड

पर्यटन अधिकारी डीके शर्मा ने बताया कि गोवर्धन के पैंठा गांव में हेलीपैड बनाया गया है। जिसका निर्माण पीडब्ल्यूडी द्वारा किया गया है। पांच एकड़ में बने इस हेलीपैड में लगभग 5 करोड़ रुपये का खर्च आया है। इसमें बाउंड्री वॉल भी शामिल है।

पर्यटन उद्योग को नई उड़ान

हेलीपोर्ट सुविधा से ब्रज के पर्यटन उद्योग को पंख लगेंगे। देशी-विदेशी सैलानियों को यहां आने पर हेलीकॉप्टर की सैर का अनुभव मिलेगा। पर्यटन विभाग ने बकायदे इसका ट्रायल किया, ये राइड सात मिनट में पूरी हुई। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि गोवर्धन में गिरिराज पर्वत की जो 21 किमी की परिक्रमा है, उसे हेलीकॉप्टर से सात मिनट में पूरा किया जा सकेगा।

पूजा मिश्रा,
उप संपादक

रिंकू सिंह...
T 20 का रॉकस्टार

क्रिकेट में छोटे कद के बड़े खिलाड़ियों की लंबी फेहरिश्त है। सचिन तेंडुलकर इस फेहरिश्त के सबसे बड़े नाम हैं। ठीक उन्हीं की तरह ताबड़तोड़ क्रिकेट के खेल में नाम बना रहे है क्रिकेटर हैं रिंकू सिंह। रिंकू सिंह ने IPL में अपने गगन चुंबी छक्कों से पहले तहलका मचाया।

फिर इंटरनेशनल क्रिकेट में मॉन्स्टर सिक्सर जड़कर जीत की गारंटी बन गए हैं। T20 में कमाल के प्रदर्शन के बाद रिंकू को वन डे फॉर्मेट में भी चुना गया। रिंकू सिंह आज की तारीख में सुपरस्टार क्रिकेटर बन चुके हैं। लेकिन यूपी के इस लड़के की कहानी में सिर्फ हैप्पी मोमेंट भर नहीं। रिंकू सिंह गर्दिश से निकले सितारे हैं। क्रिकेट जगत में इस खिलाड़ी की उपलब्धियां सिर्फ 22 गज की पिच और आंकड़ों तक सिमटी नहीं हैं। रिंकू सिंह क्रिकेट में अजेय मानी जाने वाली ऑस्ट्रेलिया जैसी टीम के जबड़े से जीत छीनने वाले योद्धा हैं।

रिंकू सिंह में जीत का जज्बा, उनके खेल में तूफानी रफ्तार, आखिरी गेंद तक जीत की कोशिश करते रहने की ललक जिंदगी से मिले सबक की बदौलत है। रिंकू सिंह की कहानी एक खिलाड़ी के खेल से बड़े होने का परफेक्ट प्लॉट तैयार कर रही है। भविष्य के गर्त में क्या है ये तो कोई नहीं जानता लेकिन

रिंकू सिंह ने सिर्फ अपने खेल पर ध्यान दिया तो उनका लेजेंड बनना तय है। क्योंकि क्रिकेट के खेल में सबसे बड़ा खिलाड़ी उन्हें माना गया है जो फिनिशर होते हैं। रिंकू सिंह को मैच फिनिश करना बखूबी आता है। इसकी पहली झलक 9 अप्रैल 2023 को रिंकू सिंह ने IPL में दिखाई थी। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच के आखिरी ओवर की आखिरी 5 गेंदों में लगातार 5 छक्के लगाकर रिंकू ने तहलका मचा दिया था। इसके बाद वर्ल्ड कप विनर ऑस्ट्रेलिया से हुए T 20 मैच में रिंकू ने ऐसा ही कारनाम कर दिखाया। विश्वविजेता ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रिंकू सिंह ने जो छक्का मारा वो पूरी सीरीज का सबसे बड़ा सिक्सर था। उस छक्के को मॉन्सटर सिक्सर का तमगा तक मिला। ये तो रिंकू की खेल प्रतिभा रही इससे इतर है इस खिलाड़ी की जुझारू जिंदगी की कहानी।

रिंकू सिंह के पिता खानचंद्र सिंह की कमाई से घर का खर्च निकलना मुश्किल हो रहा था। इस वजह से रिंकू और उनके सभी भाई छोटे-मोटे काम करने लगे। हलांकि रिंकू ने क्रिकेट खेलना कभी बंद नहीं किया। अपने मोहल्ले में ही क्रिकेट खेलकर रिंकू ने स्थानीय लेवल पर खूब नाम कमाया। जिसके बाद उनकी प्रतिभा को स्थानीय कोच ने पहचाना। रिंकू सिंह ने क्रिकेट की कोचिंग लेनी शुरू की। फिर तो बहुत जल्द उन्हें यूपी की अंडर 16 टीम में सेलेक्ट कर लिया गया। ये साल 2013 था। रिंकू के अटैकिंग गेम ने जल्द ही उन्हें सबकी नजरों में ला दिया। उनका सेलेक्शन UP 19 और लिस्ट ए क्रिकेट में भी हो गया। महज 16 साल की उम्र में रिंकू UP क्रिकेट टीम के लिए सेलेक्ट हुए। रिंकू ने राज्य की टीम के पहले ही मैच में 83 रन बनाए। नवंबर 2016 में उत्तर प्रदेश की टीम के लिए फर्स्ट क्लास में भी रिंकू सिंह को डेब्यू का मौका मिला। घरेलू क्रिकेट में रिंकू ने 40 मैचों और 59 पारियों में 59.89 की औसत से 2875 रन बनाए हैं।

रिंकू सिंह का जन्म 12 अक्टूबर 1997 को अलीगढ़ में एक बेहद गरीब परिवार में हुआ था।

रिंकू के पिता लखनऊ में एक एलपीजी एजेंसी में काम करते थे और लोगों के गैस सिलेंडर डिलीवरी किया करते थे।

खुद रिंकू ने भी स्वीपर और क्लीनर के तौर पर काम किया है।

परिवार की आर्थिक स्थिति ने रिंकू के बड़े सपने देखने की आजादी नहीं दी लेकिन उन्होंने क्रिकेट से अपनी मोहब्बत कभी कम नहीं होने दी।

अलीगढ़ में एक गैस वैंडर के पाँच बेटों में एक रिंकू सिंह की कहानी युवाओं के लिए मिसाल है. रिंकू के पिता खान चंद्र आज भी गैस डिलिवरी करते हैं। रिंकू सिंह को स्कूली दिनों से ही क्रिकेट खेलने में मज़ा आने लगा था. खान चंद्र बताते हैं कि बचपन से रिंकू का ध्यान मैच में ही था लेकिन वो उन्हें खेलने से मना किया करते थे। रिंकू सिंह के शुरुआती दिनों से अलीगढ़ में मसूद अमीन की कोचिंग मिली और वह आज भी उनके कोच बने हुए हैं जबकि मोहम्मद ज़ीशान से मिली मदद पर रिंकू सिंह कहते हैं कि उनकी मदद और मार्गदर्शन का अहम योगदान रहा। इसके बाद शाहरुख़ ख़ान की कोलकाता नाइटराइडर्स ने 2018 में उन्हें आईपीएल के लिए 80 लाख रुपए में अनुबंधित किया, वो भी तब जब रिंकू सिंह को कोई नहीं जानता था हालांकि उत्तर प्रदेश की ओर से घरेलू क्रिकेट में उनका प्रदर्शन निखरने लगा था। रिंकू सिंह में भारतीय क्रिकेट का भविष्य दिखता है। ये खिलाड़ी कुछ अलग ही मिट्टी का बना है। मैच दर मैच रिंकू अपने खेल से अपना कद ऊंचा करते जा रहे हैं। क्रिकेट के लिटिल मास्टर तेंडुलकर की तरह ही एक दिन रिंकू रिकॉर्ड्स के शिखर पर विराजमान हों तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

पैरा बैडमिंटन में देश का बढ़ाया मान

गौतमबुद्ध नगर के पूर्व डीएम सुहास एलवाई ने दुबई में हुए पैरा बैडमिंटन 2023 में सिल्वर मेडल जीता है। उन्होंने मलेशिया के खिलाफ शानदार पारी खेली और सिल्वर मेडल जीता। इससे पहले उन्होंने दुबई में हो रहे पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल प्रतियोगिता में लगातार 4 देशों को करारी हार दी। उसके बाद अब फाइनल में अपना जलवा बिखेरा। यह गौतमबुद्ध नगर और उत्तर प्रदेश के अलावा पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है। सुहास एलवाई देश के पहले ऐसे आईएएस अफसर हैं, जिन्होंने खेल की दुनिया में भारत का नाम पूरे विश्व में रोशन किया है। इस कामयाबी पर सुहास एलवाई ने बताया कि यहां पर पहुंचने से पहले इराक, जर्मनी, नाइजीरिया और दक्षिण कोरिया के खिलाड़ियों के खिलाफ लगातार 5 मैच जीते। मलेशिया से मुकाबला हुआ, जिसमें मैंने सिल्वर मेडल जीता।

एशियाई गेम्स में गोल्ड मेडल

साल 2023 में हुए एशियाई गेम्स में सुहास एलवाई ने पैरा एशियाई गेम्स में गोल्ड मेडल जीता था। उन्होंने चीन के खिलाफ शानदार जीत हासिल की थी और भारत का झंडा पूरे विश्व में लहराया। उससे पहले उन्होंने थाईलैंड पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीता। वह लगातार भारत की तरफ से प्रतिनिधित्व करते हुए नाम रोशन कर रहे हैं। इसके लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अलावा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी उन पर नाज है। उन्होंने कहा कि मुझे बेहद खुशी है कि मैंने यह कामयाबी हासिल की है, लेकिन मेरा सफर आगे बढ़ता रहेगा। मुझे अपने देश के लिए दुबई पैरा बैडमिंटन में परचम लहराना है। मैं आगामी ओलंपिक चैंपियनशिप के लिए तैयारी कर रहा हूं।"

पहले भी देश का बढ़ाया मान

सुहास एलवाई बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। देश में उनकी रैंकिंग नंबर वन है। पूरी दुनिया में वह दूसरे नंबर के खिलाड़ी हैं। फिलहाल सुहास एलवाई इसी साल होने वाले पैरा ओलंपिक के लिए तैयारी कर रहे हैं। वह पिछले दो पैरा ओलंपिक में रजत पदक और कांस्य पदक हासिल कर चुके हैं। उनका लक्ष्य आने वाले पैरा ओलंपिक में देश के लिए स्वर्ण पदक हासिल करना है। सुहास एलवाई उत्तर प्रदेश कैडर में वर्ष 2007 बैच के आईएएस अफसर हैं। मूल रूप से कर्नाटक में शिमोगा जिले के रहने वाले हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान उत्तर प्रदेश सरकार ने सुहास एलवाई को 3 मार्च 2020 को गौतमबुद्ध नगर का जिलाधिकारी बनाकर भेजा था। इससे पहले सुहास एलवाई महाराजगंज, सोनभद्र, हाथरस, प्रयागराज, जौनपुर और आजमगढ़ के जिलाधिकारी रह चुके हैं। बीते 27 फरवरी 2023 को सुहास एलवाई का प्रमोशन हुआ है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनको खेलकूद विभाग का सचिव नियुक्त किया है।

निर्मल कुमार गौड़
संवाददाता